GOVT. ADARSH

GIRLS COLLEGE SHEOPUR (M.P.) 476337

ISBN NO.- 978-93-341-1467-6

"भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध सन्दर्भ"

EDITOR
Mr. Ajeet Singh

PRINCIPAL
Prof. A.K. Dohare

Dr. K. Ratnam
Additional Director
Gwalior-Chambal Sambhag (MP)

Dr. Bipin Bihari Sharma
Chief Patron & Principal,
PMCOE College Sheopur (MP)

Prof. Arvind Kumar Dohare
Patron & Principal,
Govt. Adarsh Girls College Sheopur (MP)

Dr. Ankit Nagar
(Asst. Prof.)
Doon University Dehradun (Uttarakhand)

Dr. Rajshree Mathpal
(Asst. Prof.)
Banasthali Vidyapith Niwai (Rajasthan)

SUB-THEME FOR PAPERS:

- ✓ भारतीय ज्ञान परंपरा के राजनैतिक और ऐतहासिक आयाम
- ✓ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा
- ✓ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में कला, साहित्य और संस्कृति
- ✓ वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव
- ✓ भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, आध्यात्म और विज्ञान
- ✓ सामाजिक, आर्थिक और वाणिज्यिक व्यवस्था
- ✓ आयुर्वेद, योग, मेडिसिन, वास्तुकला और अभियांत्रिकी
- ✓ व्यक्तित्व विकास में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका
- ✓ भारतीय ज्ञान परंपरा और प्राचीन वैज्ञानिक

International Educational Applied Research Journal
Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal ISSN No. 2456-6713

IEARJ
International Educational Applied Research Journal

9 789334 114676

भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध सन्दर्भ

दिनांक- 6 अगस्त 2024

Govt. Adarsh Girls College Sheopur (Madhya Pradesh) 476337

Convener

Prof. Ajeet Singh

Organizing Secretary

Dr. Mahesh Kushwah

Dr. Nisha Verma

Dr. Sangeeta Shakya

Prof. Kavita Yadav

Prof. Vedanki

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal - Equivalent to UGC Approved Journal ISSN No. 2456-6713

IEARJ
International Educational Applied Research Journal

Convener

Mr. Ajeet Singh

Additional Director

Dr. K. Ratnam

Gwalior-Chambal Sambhag (MP)

Chief Patron

Dr. Bipin Bihari Sharma

Principal, PMCOE College Sheopur (MP)

Patron Principal

Prof. Arvind Kumar Dohare

Govt. Adarsh Girls College Sheopur (MP)

Eminent Speakers

Dr. Ankit Nagar

(Asst. Prof.)

Doon University Dehradun (Uttarakhand)

Eminent Speakers

Dr. Rajshree Mathpal

(Asst. Prof.)

Banasthali Vidyapith Niwai (Rajasthan

Advisory Committee

Dr. S. D. Rathor | **Dr. S. N. Sharma**

Dr. O. P. Sharma | **Dr. Subhash Chand**

Dr. Ramesh Bhardwaj

Sub-theme for Papers:

- ✓ भारतीय ज्ञान परंपरा के राजनैतिक और ऐतहासिक आयाम
- ✓ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा
- ✓ प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में कला, साहित्य और संस्कृति
- ✓ वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव
- ✓ भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, आध्यात्म और विज्ञान
- ✓ सामाजिक, आर्थिक और वाणिज्यिक व्यवस्था
- ✓ आयुर्वेद, योग, मेडिसिन, वास्तुकला और अभियांत्रिकी
- ✓ व्यक्तित्व विकास में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका
- ✓ भारतीय ज्ञान परंपरा और प्राचीन वैज्ञानिक

शुभकामना संदेश

डॉ. के. रत्नम्
अतिरिक्त संचालक
म.प्र. उच्च शिक्षा विभाग
ग्वालियर-चम्बल संभाग, ग्वालियर

मुझे यह जानकर बहुत ख़ुशी हो रही है शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर द्वारा विषय "भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध सन्दर्भ" पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कर रहा है। यह सराहना करने योग्य है कि राज्य और देश के कई युवा शोधार्थी सम्मेलन में भाग लेंगे। मुझे आशा है, कि राष्ट्रीय संगोष्ठी के परिणाम निश्चित रूप से सभी प्रतिभागियों को "भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध सन्दर्भ"के बारे में आवश्यक दिशा -निर्देश और व्यवहारिक अनुसंशा प्रदान करेंगे।

मैं आयोजकों को बधाई देता हूँ, और संगोष्ठी की शानदार सफलता के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ।

शुभकामना संदेश

डॉ. बिपिन बिहारी शर्मा
मुख्य संरक्षक एवं प्राचार्य
पीएमसीओई (PMCOE)
पी.जी. कॉलेज श्योपुर (म.प्र.)

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है, कि शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर द्वारा विषय "भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध सन्दर्भ" पर एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए ई-प्रोसीडिंग भी प्रकाशित की जा रही है। जिसमें शोध पत्र एवं आलेखों को सम्मिलित किया जाएगा। इस राष्ट्रीय वेबीनार में देश व प्रदेश के कई विद्वान, विषय विशेषज्ञ भाग लेंगे एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ऑनलाईन शिक्षा की प्रभावशिलता, आवश्यकता एवं वर्तमान समय में इस विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला जाएगा।

मुझे पुर्ण विश्वास है, कि इस वेबीनार से युवा विद्यार्थी लाभंवित होंगे एवं अपने कार्यक्षेत्र में सफल होंगे। में राष्ट्रीय वेबीनार और ई-प्रोसीडिंग के प्रकाशन के लिए शासकीय महाविद्यालय, श्योपुर को अपनी अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

शुभकामना संदेश

प्रो. अरविन्द कुमार दोहरे
संरक्षक एवं प्राचार्य
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय
श्योपुर (म.प्र.) 476 337

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर उच्च शिक्षा विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन "भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध सन्दर्भ" विषय पर करने जा रहा है। इस अवसर को स्मरणीय बनाने के लिए ई-प्रोसीडिंग भी प्रकाशित की जा रही है, जिसमें शोध-पत्र एवं आलेखों को सम्मिलित किया जाएगा। इस राष्ट्रीय वेबीनार में भाग लेने वाले देश व प्रदेश के विद्वानों एवं शोधार्थियों द्वारा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आपदा प्रबंधन की आवश्यकता, आपदा प्रबंधन तथा संचार माध्यमों, तकनीकी एवं जन-जागृति के माध्यम से व इसके प्रभावों से होने वाली जन-हानि और आर्थिक हानि को कैसे कम से कम किया जा सकता है, आदि पर प्रकाश डाला जाएगा।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस वेबीनार से विद्यार्थी एवं युवा तो लाभान्वित होंगे ही, साथ ही समाज भी लाभान्वित होगा। में राष्ट्रीय वेवीनार और ई-प्रोसीडिंग के प्रकाशन के लिए शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय, श्योपुर को अपनी अग्रिम शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

INDEX

Name of Author	Tittle of Paper	Page No.
Mrs. Kavita Yadav Mrs. Vedanki Khandelwal	An Exploration of the Scientific Approach Embedded in the Indian Knowledge System (IKS)	01-04
Mrs. Poonam Geed Mr. Ajeet Singh	Ayurveda in Indian Heritage: Ancient Path to Holistic Health	05-07
Prof. Nikhil Kanungo Dr. Garima Srivastava	Ecological Richness of Chhindwara District: A Comprehensive Biodiversity Study	08-11
Miss. Anjali Dadoriva Mr. Ram Dayal Ahirwar	Conception of Ancient Hindu Governance in the Contemporary Legal Framework	12-16
Miss Nisha Verma	Discourse of Traditional Indian knowledge System and Relevance of its inclusion in Contemporary Education	17-20
Mrs. Archana Yadav Mr. Ravi Pratap Yadav	Empowering Futures: The Crucial Role of Vocational Education Today	21-23
Dr. Mahendra Kaithwas	SOCIAL EQUALITY AND EMPOWERING WOMEN STRENGTHENAS An ACCOUNTING PROFESSION: AN OVERVIEW	24-26
डॉ. योगेशकुमार बाथम डॉ. उर्मिला बाथम	व्यक्तित्व विकास मनोवैज्ञानिक अध्यन	27-28
डॉ. परवीन वर्मा श्री खेमराजआर्य	भारत की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत की ज्ञान परंपरा	29-30
प्रो. प्रकाशकुमार अहिरवार डॉ.एस.डी. राठौर	भारतीय वाणिज्य में ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक और आधुनिकभूमि	31-33
डॉ. संगीता शाक्य	राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा	34-36
प्रो.रामदयाल मकवाना श्री राजाराम मुवेल	वैश्विक संस्कृति पर भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव	37-39
Dr. Lokendra Singh Jat Mr. Vikash Jat	The Confluence of Physical Laws and Commerce in Ancient India: Lessons from Knowledge Systems	40-42
प्रो. दत्तपालसिंह भँवर	भारतीय ज्ञान परंपरा और वन संपदा	43-45
Dr. Shyam Lal Bamniya	Vedic View of the Earth, A Geological Vision into The Vedas	46-48
प्रो. अलंकृता साकेत डॉ. ललिता सिकरवार	प्राचीन भारतीय काल में भूविज्ञान और गणित की भूमिका : शिक्षा और समाज पर प्रभाव	49-50

An Exploration of the Scientific Approach Embedded in the Indian Knowledge System (IKS)

Mrs. Kavita Yadav
Department of Mathematics,
Govt. Adarsh Girls College
Sheopur, Madhya Pradesh

Mrs. Vedanki Khandelwal
Department of Physics,
Govt. Adarsh Girls College,
Sheopur, Madhya Pradesh

Abstract :

The purpose of this paper is to investigate the customs that were common in ancient India and determine whether or not they promoted the growth of a scientific mindset. The contributions made in the domains of astronomy, mathematics, medicine, physics, and technology during the ancient and medieval eras are reviewed. Indian Knowledge System (IKS) integration helps foster an inclusive, culturally aware approach to education while preserving India's intellectual legacy. In India, the knowledge systems of Jnan, Vignan, and Jeevan Darshan have developed via trial and error, observation, experience, and in-depth research. It also explores the spiritual and physical practices of yoga and meditation, which have gained global recognition for their mental, emotional, and physical benefits. The IKS is not merely a collection of customs but a methodical system of knowledge transfer that has influenced disciplines such as the development of the decimal system, the concept of zero, and advanced astronomical models. Scientific research and discoveries have a lengthy history throughout the thousands of years of Indian knowledge heritage. The current paper offers a thorough examination of science as a crucial component of IKS.

Introduction :

The Indian Knowledge System (IKS) is a vast repository overflowing with ideas from India's rich history and traditions. The term "Indian Knowledge System" (IKS) refers to a compilation of academic disciplines that originated and evolved on the Indian subcontinent. This includes fields such as philosophy, mathematics, astronomy, medicine, art and ethics. The most captivating aspect of IKS is its frequent combination of practical skills with concepts of spirituality and religion. The Indian Knowledge System (IKS) is a methodical and structured spirituality and religion. The Indian Knowledge System (IKS) is a methodical and structured framework for transferring knowledge from one generation to the next. Instead of being a mere custom, it is an organized system and method of knowledge transfer. This rich legacy of enduring Indian knowledge and philosophy is recognized as a guiding principle in the NEP 2020. The fundamental elements of the Indian Knowledge Systems are Jnan (knowledge), Vignan (science), and Jeevan Darshan (philosophy of life) have developed through a dynamic interplay of knowledge, observation, investigation, and rigorous analysis. The following are key aspects of the Indian knowledge tradition:

1. Vedas and Upanishads: Hinduism's foundational books, the Vedas and Upanishads, provide a thorough examination of the nature of reality and the human condition. The oldest known scriptures, the Vedas, are an extensive compilation of songs, prayers, and ceremonies. The Rig Veda, Yajur Veda, Sama Veda, and Atharva Veda are the four main texts that comprise them. The philosophical treatises known as the Upanishads, which are associated with the Vedas, dig deeper into metaphysical issues and investigate the nature of awareness itself.

2. Mathematics & Science: Significant advances in science and mathematics have been made possible by the Indian Knowledge System (IKS). Advanced mathematical principles and scientific comprehension are demonstrated by ancient Indian scriptures such as the Vedas, Upanishads, and Sulbasutras. Here are some key areas where IKS has had a profound impact:

Decimal system and Zero: It is thought that India is where the modem decimal system started. An essential tool for arithmetic, algebra, and other mathematical processes is this system, which is based on the number 10. India is also credited with the development of the concept of zero, which is an essential part of the decimal system. When performing mathematical operations such as addition, subtraction,

multiplication, and division, zero is required since it denotes the absence of amount.

- **Algebra:** Second-degree equations such as quadratic equations can be solved using techniques devised by Indian mathematicians. The foundation for the next centurie's development of algebra was established by these techniques. Other algebraic ideas, such negative numbers and the notion of infinity, were also studied by Indian mathematicians.
- **Geometry:** Geometric formulas and constructs, such as the Pythagorean theorem, which connects the lengths of a right-angled triangle, are found in the Sulbasutras, early Vedic literature. The area and volume of different shapes were among the other geometric concepts studied by Indian mathematicians.

3.Yoga and Meditation: The goal of yoga is to unite the practitioner with the divine via both physical and spiritual practices. It comprises of breathing exercises, asanas (physical postures), and pranayama (meditation).

The Indus Valley Civilization (3300-1900 BCE) has the first known records of yoga, and it is from this period that the practice originated in ancient India. The basic principles and practices of yoga are explained in the ancient book known as Patanjali's Yoga Sutras.

The acceptance of yoga and meditation as beneficial practices for overall health has resulted in their widespread use throughout the world. In the past few years, there has been a noticeable increase in the number of people who incorporate yoga and meditation into their daily routines, both in the East and the West.

There are a number of reasons why these practices are so highly regarded and sought after, including the fact that yoga and meditation have been extensively studied and found to have positive effects on mental, emotional, and physical health. Additionally, research has demonstrated that regular yoga practice enhances balance, strength, endurance, and flexibility. It has also been shown to lessen symptoms of depression. anxiety, and stress while also enhancing general health.

4. Engineering and Architecture: Step wells, like the Rani ki Vav in Gujarat, are examples of the advanced water management systems that ancient Indian civilizations created. These systems are studied today for sustainable water solutions due to their remarkable engineering feats. Temples such as Tamil Nadu's Brihadeeswarar Temple display sophisticated architectural concepts that are examined for their elegant and structurally sound designs.

5. Literature and Arts: A vast variety of publications in several languages, including Hindi, Tamil, Sanskrit, and others are included in Indian literature Prominent examples of Indian literary legacy include epics like the Ramayana and Mahabharata, as well as classic works like the dramas and poems of Rabindranath Tagore. Indian traditional dance, music, painting, and sculpture are a few artistic disciplines that highlight the depth and variety of
Indian culture.

6. Ayurveda: Ayurveda, an ancient medical system, emphasizes the importance of keeping the mind, body, and spirit in a healthy balance. It entails physical activities like yoga, meditation, food, and natural remedies. Ayurvedic texts like the Sushruta Samhita and Charaka Samhita provide in depth descriptions of illnesses, treatments, and surgical methods. The Sushruta Samhita is also noted for its detailed accounts of surgical procedures, including the early practice of plastic surgery, wound management, and even the principles of antisepsis.

Moving further back in time to the Vedic era, we find that the book of the Vedas has left us with ample evidence that the Vedic practitioners were not only very wise and perceptive sky observers, but also made extensive use of that knowledge in their day-to-day lives. We can now identify some Vedic practices as astronomy because hymn collections, descriptions of rituals, and philosophical speculations point to them. The requirement for particular religious practices, particularly the desire to determine the exact time for performing sacrifices, provided a significant amount of motivation and support for a methodical study of celestial entities. The fields of biology, physics, chemistry, medicine, astronomy, and mathematics are among the many disciplines that make up science in Indian knowledge traditions. Some significant aspects of science in Indian knowledge traditions are as follows:

Mathematics and Astronomy: A Timeless Intersection

Throughout history, astronomy and mathematics have been closely related, developing a symbiotic relationship that has fueled important advances in both disciplines. Mathematics and astronomy have been related since the dawn of civilization. Simple mathematical methods were employed by the Babylonians and Egyptians to monitor solar, lunar, and planet movements. The link between these two disciplines was, however, codified by the ancient Greeks. Astronomers like

Hipparchus and Ptolemy used geometric techniques, which were first developed by mathematicians like Pythagoras and Euclid, to create models of planetary motion. Two fields in which Jain mathematicians made significant contributions to Indian mathematics were combinatorics and the study of permutations and combinations.

The mathematical treatises authored by the 9th-century AD Jain mathematician Mahavira cover a wide range of topics, including algebra, geometry, and permutations. The Kerala School of Mathematics achieved significant advances in trigonometry, calculus, and infinite series expansions during its peak in the 14th and 16th centuries. The writings of Madhava (1340-1425 AD) and Nilakantha Somayaji (1444-1545 AD) demonstrate South India's strong mathematical and astronomical heritage. Prominent mathematician Madhava of Sangamagarama, who belonged to this school, created the series expansion of trigonometric functions and other early calculus principles.

Mathematics will certainly continue to influence astronomy in the future. Mathematical innovation will be crucial as we attempt to answer fundamental puzzles about the universe, such as the nature of dark matter and dark energy, the beginnings of the cosmos, and the prospect of life beyond Earth. Further developments in the highly complex fields of string theory and quantum physics could reveal new details about the structure of the cosmos.

Indian knowledge system in Physics

Notable advancements in physics have been made by the Indian Knowledge System (IKS). especially in the areas of fundamental notions like matter, energy, and the nature of the universe. These concepts were investigated in ancient Indian philosophical and scientific traditions in ways that have impacted both classical and contemporary physics.

Concepts of energy and matter: A framework for understanding the material world, akin to early atomic theories in Westem science, was provided by the elemental theory known as Panchabhuta, which introduces the concept of the five elements earth (Prithvi), water (Apas). fire (Agni), air (Vayu), and ether (Akasha) which are considered the fundamental building
blocks of the universe.

- **Mechanics and Motion:** Though essentially ethical, the idea of Karma in Indian philosophy also has ramifications for comprehending causality and motion. The notion that all acts have equivalent reactions emphasizes the connection between physical actions and their results and is a reflection of Newton's third law of motion.
- **Sound and Acoustics:** The idea of Nada Brahma, which translates to "the universe is sound," is a reflection of the ancient Indian knowledge of resonance and vibration. Sound, or Shabda, is regarded as a fundamental force in creation, and this concept is examined in relation to both philosophical and physical occurrences. Indian traditions on sound bear similarities to contemporary physics' study of acoustics. The idea that sound has the ability to affect matter and awareness is the foundation for the use of mantras, which are particular sound vibrations. This thought is related to the current research on sound waves and how they affect physical systems, as well as the theory that vibrations and frequencies are essential to the universe's structure.
- **Conclusion:** It is clear from examining the scientific methodology ingrained in the Indian Knowledge System (IKS) that India's intellectual legacy is firmly grounded in empirical and methodical investigation in addition to being rich in philosophical and spiritual insights. Like the current scientific method, information is acquired by experimentation, rigorous analysis, and observation in the IKS, which represents a unique blend of tradition and science. Over the course of millennia, this method has been developed and has produced important advancements in metallurgy, mathematics, astronomy, and medicine. In summary, we can thus state that by revealing the fundamental ideas behind IKS and its associated activities, we can demonstrate their efficacy and apply it to the resolution of modem problems through the application of scientific research methodologies.

References

[1].Mandavkar, Pavan, "Indian Knowledge System (IKS)", Available at SSRN4589986 (2023).

[2]. Khan, S. and Sharma, M. "An Overview on Indian Knowledge System". Integrated Journalfor Research in Arts and Humanities, 4(4), 42-46, (2024).

[3]. Gupta, A., "A study of the scientific approach inherited in the Indian knowledge system (IKS). The Scientific Temper, 15(02), 2385-2389, (2024).

[4]. Maheshwari, A., "Integration of Indian Knowledge System: A Way to revive Higher Education", UNIVERSITY NEWS, 62, 9, (2024).
5]. Sithole, M. (2016). Indigenous physics and the academy. In African indigenous knowledge and the sciences (pp. 93-105). Brill.

Ayurveda in Indian Heritage: Ancient Path to Holistic Health

Mrs. Poonam Geed
Department of Chemistry,
Govt. Adarsh Girls College
Sheopur (MP)

Mr. Ajeet Singh
Department of Botany,
Govt. Adarsh Girls College
Sheopur (MP)

Abstract :

Ayurveda, the traditional Indian system of medicine has given great emphasis to the promotion of health. Ayurveda therapies are based on restoration of body balance and nourishment oftissues.Ayurveda incorporates all forms of lifestyle in therapy. Thus yoga, aroma, meditation, gems, amulets, herbs, diet, astrology, colour and surgery etc. The recent advances in the field of Ayurveda have motivated many researchers to look at the basic elements used to explore the Ayurvedic field of research. As we know, now-a-days research is the prime need of contemporary Ayurveda.

Key word- Ayurveda- meditation, lifestyle, rasayana.

Introduction :

Ayurveda is the science of life and the oldest medical system in Indian tradition. It is originated from the pre-Vedic period. This is one of the oldest health care methods and is still widely practiced today. In this, an effort is made to holistically adopt both preventive and disease modifying method for the physical, mental, social, moral and spiritual welfare of the individual. One of the main reasons for the lasting success of Ayurveda is that it uses herbs and materials available in the forests of the country to cure diseases. Due to the abundance of various types of herbs available in the forests in our country, one of the main factors for longest success of Ayurveda is that it uses the herbs and ingredients and improves health. The goal of Ayurveda is not only to prevent diseases but also to preserve a healthy state of mind in a healthy body.

History of Ayurveda :

The knowledge of Ayurveda in incident decade have been found by three surviving texts of Charaka, Sushruta and Vaghbata. Charaka (1st century A.D.) wrote Charka Samhita (samhita- meaning collection of verses). Sushruta (4th century A.D.) wrote his Samhita i.e. Sushruta Samhita. Vaghbata (5th century A.D.) compiled the third set of major texts called Ashtanga Hridaya and Ashtanga Sangraha. Charaka's School of Physicians and Sushruta's School of Surgeonsbecame the basis of Ayurveda and helped organize and systematically classify into branchesof medicine and surgery. Sixteen major supplements (Nighantus) were written - Dhanvantari, Bahavaprakasha, and Shaligrama.

There developed eight branches/divisions of Ayurveda :

1. Kaya-chikitsa (Internal Medicine)
2. Shalakya Tantra (surgery and treatment of head and neck, Ophthalmology and ear. Nose, throat)
3. Shalya Tantra (Surgery)
4. Agada Tantra (Toxicology)
5. Bhuta Vidya (Psychiatry)
6. Kaumara bhritya (Pediatrics)
7. Rasayana (science of rejuvenation or anti-ageing)
8. Vajikarana (the science of fertility and aphrodisiac)

Current status of Ayurveda :

Around 70 percent of the healthcare needs of India is still being catered by traditional systems of medicine including Ayurveda, which highly depend on the natural resources. It is estimated that the world has about 250,000 plants to which India's contribution is about 50,000 plants of all groups including about 20,000 flowering plants and conifers. It is estimated that out of these. 7,000 plants are used in the Traditional Systems of Medicine and according to a recent survey it is reported that 1,700 plants are used in the Ayurvedic system of medicine. However, the number of vegetable drugs actually used by various Ayurvedic practitioners in India and available in different markets is around 700.

Ayurvedic Herbs Botanical Names :

Ayurvedic name **Botanical name** **Application**

Aloe Barbadensis Kumari Exudation www
Azadirachta indica A. Juss Nimba Seeds, oil, resin
Aristolochia indica Linn. IshwarimulaRoot
Asparagus adscendens Musali Root
Asparagus racemosus Willd. SatavariRoot
Butea frondosa Palasha, Dhaka Seed, root, leaf, lower
Buchananialanzan Badam, almond Fruit, see
Canscora decussate Bhanga Sankh Leaves, manjari,

Carica Papaya Linn. Madhu karkati Fruit, seed, leaf

Cavratia trifolia Amlata Leaves, root
Citrus limon Linn. Jambira Fruit
Clitorea tematea Aparajita Complete plant, root, seed
Eichhorinia crassipes Jalakumbhi Complete plant
Gymnema sylvestre. Madhu nasini Leaf
Mentha piperita Podina, peppermint Leaves
Ocimumbasilum Tulsi Complete plant leaves.
Pandanus tectori Ketaki
Flower, root, oil, pollen grain
Saraca indica www

to accomplish the following goals of treatment

1. Strengthen immune system.
2. Efficient detoxification system.
3. Responsive inflammatory system.
4. Optimal metabolic system.
5. Balanced regulatory system.
6. Enhanced regenerative system.
7. Harmonize the life force.
8. Free radical scavenging or anti-oxidant.

Conclusion:

Today Ayurveda is one of the most effective alternative forms of medicine. Each herb used in the medicines is nutritive and distinctive for its medicinal properties, besides being free from side effects. The therapeutic system helps in complete rejuvenation of the body and is at par with the allopathic medicines.

References:

1) Unnikrishnan P. M. An Ayurveda's understanding plant insight into of Medicinal, August 2004.
2) Unnikrishnan PM. How does the Medici plant controversy occur August 1998.
3) Sarin Y K. Illustrate manual of Herbal drugs council of scientific Industrial Research and Indian Council of Medical Research. New Delhi 1998

4) Mishra, L., Singh, B.B., and Dagenais, S., Ayurveda: a historical perspective and principles ofthe traditional healthcare system in India, Altem Health Med., 36-42, and 2001.
5) Mishra, L., Singh, B.B., and Dagenais, S., Healthcare and disease management in Ayurveda, Altem. Health Med., 44-50, 2002.
6) Lindsay, J., Laurin, D., Verreault, R., Hebert, R., Helliwell, B., Hill, G.B., and McDowell, a prospective analysis from the Canadian Study of Healthand Aging, Am. J. Epidemiol., 156, 2002.
7) Janmejava et al: The Concept of Public Health in Ayurveda, IAMJ: Volume 1; Issue 2; March April 2013 1.00p
8) Acharya YT, editor. Chraka Samhita Athedashamahamuliva. Vol. 26 2011. p. 187 of Agnivesha, Sutra Sthana:
9)Wang JW, Chen W. Wang YL. A Ginkgo biloba extract promotes proliferation of endogenous neural stem cells in vascular dementia rats. Neural Regenerat Res. 2013:8:1655-
62
10)Warrier SR, Haridas N, Balasubramanian S, Jalisatgi A, Bhonde R, Dharmarajan A. A synthetic formulation, Dhanwantharamkashava, delays senescence in stem cells. Cell Prolif. 2013:46:283-90.

Ecological Richness of Chhindwara District: A Comprehensive Biodiversity Study

Prof. Nikhil Kanungo
Department of Botany,
Govt. Autonomous P.G. College,
Chhindwara (M.P.)

Dr. Garima Srivastava
Department of Bioscience and Biotechnology,
Banasthali Vidyapith, Newai
(Rajasthan)

Abstract :

Chhindwara district of Madhya Pradesh is well known for the use of medicinal plants by the tribal peoples in the treatment of various ailments. The present paper reports therapeutic uses of medicinal plants for wound healing by the tribal communities of Chhindwara district. A total of 20 plant species belonging to 18 families are identified which are used by the people of study area. One hundred informants of different age (35 to 90 years old) were interviewed to extract ethnomedicinal information. Present study provides baseline data on wound healing properties of native plants that can be exploited by pharmaceutical industry for screening new active compounds.

Introduction :

Wound healing or repair is an intricate process in which the skin or another tissue repairs itself after injury. Acute wound healing occurs in four stages namely hemostasis, inflammation, proliferation and remodeling. Underlying metabolic disturbances may disrupt the regenerative process, causing delayed healing. This has imposed a huge financial burden in both the developed and developing countries. As a result, the possibility of derivative altemative, cost effective therapies from Traditional System of Medicine (TSM) based on folklore information has been explored.

History of Ayurveda :

The knowledge of Ayurveda in incident decade have been found by three surviving texts of Charaka, Sushruta and Vaghbata. Charaka (1st century A.D.) wrote Charka Samhita (samhita- meaning collection of verses). Sushruta (4th century A.D.) wrote his Samhita i.e. Sushruta Samhita. Vaghbata (5th century A.D.) compiled the third set of major texts called Ashtanga Hridaya and Ashtanga Sangraha. Charaka's School of Physicians and Sushruta's School of Surgeonsbecame the basis of Ayurveda and helped organize and systematically classify into branchesof medicine and surgery. Sixteen major supplements (Nighantus) were written - Dhanvantari, Bahavaprakasha, and Shaligrama.

Classical management of wounds starts with an aseptic dressing and ends with the rehabilitation of normal structure and function in the affected part of the body. The plant based traditional therapy accelerates the wound healing process and also maintain the quality and aesthetics during the process of wound healing. Biswas and Mukherjee (2003) reviewed wound healing plants and described 164 plant species as novel source for obtaining bioactive substances with potential wound healing activity.

Classical management of wounds starts with an aseptic dressing and ends with the rehabilitation of normal structure and function in the affected part of the body. The plant based traditional therapy accelerates the wound healing process and also maintain the quality and aesthetics during the process of wound healing. Biswas and Mukherjee (2003) reviewed wound healing plants and described 164 plant species as novel source for obtaining bioactive substances with potential wound healing activity.

The plants are used as first aid, washing of wounds, extraction of pus, as coagulants for infected wounds. Scientific investigations have been carried out to assess the wound healing properties of some drugs. This paper is a review of some of the plant medicines used by the tribal community,
possesses unique untold information about plants. This knowledge is being etemally handed down from generation to generation. The objective of this study is to interact with local traditional healers and document their knowledge on medicinal plants and their widespread uses.

Methodology :

Author have explored the area of Sillewani and Patalkot valley that includes 13 villages. The data including local name, mode of preparation, medicinal uses, parts used were collected using interview, questionnaire, collecting samples and discussions with the tribal practitioners. Frequent visit to the tribal villages in Patalkot and Sillewani valley regions of the district were made. A close association was maintained with the people to understand their indigenous knowledge system.

Result and Discussion :

The study includes information on 20 plant species belonging to 18 families. The result of the survey is discussed as:

1. Achyranthus aspera Linn.

Family - Amaranthaceae Local name Chirchita Habit - Herb Uses - Fresh roots or leaves are ground with stones and applied on wounds. Fresh stem is used in mouth ulcers and throat problems.

2. Aegle marmelos Corr.

Family - Rutaceae Local name - Belpatra Habit - Tree Uses - Leaf paste is applied as a disinfectant in fresh or old burning wounds. The pulp of ripe fruits is used in intestinal ulcer and piles.

3. Boerhaaviadiffusa Linn.

Family - Nyctaginaceae Local name - Punamava Habit - Herb Uses - The decoction of fresh plant is given in the treatment of nodules in the body. The root is diuretic, laxative, expectorant and rejuvenating. A powder of the root can be taken in small doses three times a day for the treatment of piles and ulcer.

4. Calotropis proceraAit.

Family - Asclepiadaceae Local name - Akona Habit - Shrub Uses Stem and root extract is used as an antiseptic for wound wash. Ash obtained from the seed fibers is applied over old wounds to accelerate healing process.

5.Cardiospermum halicacabum Linn.

Family - Asclepiadaceae Local name - Akona Habit - Shrub Uses Stem and root extract is used as an antiseptic for wound wash. Ash obtained from the seed fibers is applied over old wounds to accelerate healing process. Family Celastraceae Loca name Lataphataki Habit - Climber Uses - Fresh or dry seeds are crushed and used on old wounds. Leaf juice is used as an antiseptic on fresh cuts/wounds.

6. Bryophyllumcalycinum Salib.

Family Crassulaceae Local name - Patthatchur Habit - Herb Uses - Fresh leaves are crushed with hands and the extract is applied over cuts/wounds for rapid healing. Leaf paste is used on wounds due to bum.

7. Biophytumsensitivum Linn.

Family Gerandaceae Local name Jangli Lajwanti Uses fresh leaves and seed paste are used in fresh or old buming wounds. Seed paste is more effective in syphilitic ulcers.

8. Euphorbia hirta Linn.

Family - Euphorbiaceae Local name Doodhi Habit - HerbUses - Fresh leaves are crushed with hands and the extract is used as tincture or disinfectant on fresh cuts for rapid healing.

9. Elephantopusscaber Linn.

Elephantopusscaber Linn. Family - Asteraceae Local name Jangalgobhi Habit-Herb Uses - Root paste are prepared by grinding with the stones and applied to promote healing of wounds.

10. Melastomamalabathricum Linn.

Family - Melastomaceae Local name - Malabar tree Habit Shrub Uses - Fresh or dry roots are grinded with stones and applied over the ulcers/old wounds.

11. Madhuca indicaGmel.

Family Sapotaceae Local name Mahua Habit - Tree Uses - Seed paste is prepared by rubbing the seeds over the smooth stone. Oil is applied over the ulcers, syphilitic ulcers, maggots and septic wounds.

12. Cordia macleoduHook.F. & Thoms.

Family - Boraginaceae Local name Dahivan Habit - Tree Uses - Stem bark or leaf paste are prepared by grinding with stones and applied over the swollen areas of cracks, cuts, wounds and fractures. Fresh leaves are used to cover the swollen areas of fractures to reduce swellings and pain.

13. Plumbago zeylanica Linn.

Family - Plumbaginaceae Local name Chitrak Habit Climber Uses Leaf or root paste is used as antiseptic, coagulants, wound wash, which promotes the rapid healing. Root extract is applied on mouth ulcer.

14. Jasminum grandiflorum Linn.

Family - Oleaceae Local name Chameli Habit - Climber Uses - Fresh leaves are crushed with hands and applied over the cuts/wounds for rapid healing.

15. Ougeniaoojeinensis Hochr.

Family - Fabaceae Local name Tinsa Habit - Tree Uses Fresh inner bark is crushed with stones and applied over the deep cuts with clothes, which prevent bleeding within a few minutes. After that no further treatment is required, the entire content will remove itself and stimulate rapid healing of wounds.

16. Pongamia pinnata (L) Pierre.

Family - Fabaceae Local name - Karanj Habit - Tree Uses - Seed paste or oil is applied over the ulcers, syphilitic ulcers, maggots and septic wounds.

17. Sida cordifolia Linn.

Family - Malvaceae Local name Khareti Habit - HerbUses - Leaf paste is used as antiseptic, coagulants and wound wash for infected wounds.

18. Berberis asiatica Roxb. ex. DC.

Family - Berberidaceae Local name - Daru haldi Habit - Shrub Uses It is used as household remedy in several ailments including conjunctivitis, ophthalmia, bleeding piles, skin eruption, and enlarged liver. Stem or root bark paste is applied over the ulcers.

19. Eclipta alba (L) Hassk.

Family Asteraceae Local name - Bhangra Habit-Herb Uses Fresh leaves are crushed with hand and juice is applied over the cut/wound for disinfection and rapid healing.

20. Vitex negundo Linn.

Family - Verbenaceae Local name - Nirgundi Habit - Shrub Uses Fresh and dry leaves are used to prepare a paste and applied over the cut/wound to promote the healing process.

Conclusion :

The survey indicates that the study area has plenty of medicinal plants to alleviate a wide spectrum of human ailments. Further, the information gathered depicts that people of this area prefer folk medicine due to their socio-economic status, lack of modem health care facilities, transportation and believe that plants are intricate aspect of their culture and tradition. It is evident from the interviews conducted in different villages that knowledge of medicinal plants is limited to traditional healers, herbalists and elderly persons who are living in rural areas. Right now, traditional healers are very old, however, some of them are reluctant to percolate their useful information to next generation.

There is a likelihood of losing this wealth of knowledge in the near future due to lack of interest among younger generation as well as their propensity to migrate to cities for money-spinning jobs. Thus, it becomes necessary to acquire and preserve this traditional system of medicine by proper documentation and identification of specimens. Documenting the indigenous knowledge through ethnobotanical studies is important for the conservation and utilization of biological resources.

References:

1. Kirtikar, K. R., & Basu, B. D. (1935). Indian medicinal plants. Lalit Mohan Basu.
2. Chopra, R. N., Nayar, S. L., & Chopra, I. C. (1956). Glossary of Indian medicinal plants. Council of Scientific and Industrial Research.
3. Council of Scientific and Industrial Research (CSIR). (1948-1976). Wealth of India: A dictionary of Indian raw materials and industrial products (Vol. 1-11). CSIR.
4. Warrier, P. K., Nambiar, V. P. K., &Ramankutty, C. (1995). Indian medicinal plants: A compendium of 500 species. Orient Longman.
5. Kumar, V. P., Chauhan, N. S., &Padh, H. (2006). Search for antibacterial and antifungal agents from selected Indian medicinal plants. Journal of Ethnopharmacology, 107(2), 182-188.

Conception of Ancient Hindu Governance in the Contemporary Legal Framework

Miss. Anjali Dadoriya
Faculty, Department of Political Science,
Government Adarsh Girls College,
Sheopur, MP

Mr. Ram Dayal Ahirwar
Faculty, NCWEB & SOL,
University of Delhi,
New Delhi

Abstract :

This paper explores the application of ancient Hindu govemance principles within today's legal and political contexts, both in India and globally. It examines how these principles align with or conflict with modem legal norms, providing examples of where Hindu governance concepts have been integrated into contemporary laws. The paper also addresses the challenges of interpreting ancient texts in the context of modem governance. Additionally, the study develops an interdisciplinary approach and ideological debate, combining insights from law, philosophy, political science, and religious studies to offer a comprehensive understanding of the relevance of Hindu govemance in the contemporary legal framework.

Keywords:

Govemance, Ancient Texts, Interdisciplinary Approach, Ideological debate

Introduction :

The integration of ancient texts into contemporary Indian governance has significantly influenced the development of legal and political frameworks that aim to achieve social, political, and legal justice. These ancient texts, particularly those rooted in Hindu philosophy, provide a rich source of ethical principles and governance models that have been adapted to meet the needs of modem society. In the context of the global production of knowledge, the interplay between these historical insights and contemporary legal theories has encouraged political communities to re-examine and redefine their foundational principles. This confluence not only reinforces the values of justice, equity, and good governance but also challenges the modem legal systems to incorporate culturally resonant philosophies, thereby enriching the global discourse on governance and law. By drawing on the wisdom embedded in ancient Indian texts, contemporary governance frameworks can craft a more holistic and inclusive approach to justice that resonates with the diverse and multicultural fabric of society.

International peace and governance:

Integrating the Hindu concept of govemance into intermational peace and governance involves adapting its principles to address contemporary global challenges. Dharma (Moral Duty): Dharma emphasizes justice, faimess, and ethical behavior. On an intermational scale, this can translate into principles of human rights, equitable development, and ethical diplomacy. Nations can use these principles to advocate for and implement fair trade practices, humanitarian aid, and conflict resolution based on considerations.

Ahimsa (Non-Violence):Derived from Hindu philosophy and prominently featured in the teachings of Mahatma Gandhi, Ahimsa underscores non-violence and peaceful coexistence. This principle supports conflict resolution through dialogue and negotiation rather than through military means, promoting peacebuilding and reconciliation efforts globally.

Role of Leadership: The Hindu concept of Rajdharma emphasizes the moral responsibilities of leaders to act in the best interests of their people and to maintain justice. In international governance, this can be reflected in the commitment of leaders to uphold international laws, respect sovereignty, and engage in transparent and accountable governance.

Holistic Well-Being:The focus on overall well-being, as seen in concepts like "Sattva" (purity and harmony), supports the idea of holistic development. This can inform international policies aimed at sustainable development, addressing global issues like poverty, environmental sustainability, and health with an integrated approach.

Strategic Pragmatism: The pragmatic approach found in Kautilya's Arthashastra can be adapted to international relations by emphasizing strategic diplomacy and realpolitik. This includes practical decision-making in foreign policy, balancing national interests with global responsibilities, and fostering cooperative agreements that benefit multiple parties.

Respect for Diversity: Ancient Hindu thought often accommodated diverse practices within a broader framework of unity. This can inspire international govemance approaches that respect cultural diversity and promote inclusivity, helping to build international institutions and agreements that honor different cultural and religious traditions. While these principles can offer valuable insights, their application must be carefully adapted to fit modem international norms and practices, such as human rights standards and democratic principles. Integrating these concepts into intemational peace and governance requires a balance between traditional wisdom and contemporary values to address global

Governance in Sanatana Dharma: Sardesai argues that Sanatana Dharma, often referred to as the eternal or universal law, provides a robust framework for governance. The book emphasizes the idea that govemance should be based on ethical and moral principles that promote the welfare of all beings. True governance should integrate spiritual values with political administration. Sardesai highlights that ancient Indian texts and practices emphasized the role of rulers as being more than just political leaders they were also seen as moral and spiritual guides for their people. Sardesai highlights the distinction and relationship between Dharma (moral duty or righteousness) and law. Sardesai suggests that laws derived from Dharma are more effective in ensuring justice and social order than laws based solely on human reasoning or political expediency. He also discusses the responsibilities of a ruler under Sanatana Dharma, often termed Raja Dharma. According to Sardesai, a king should embody the principles of Sanatana Dharma by being just, fair, compassionate, and dedicated to the welfare of his subjects. The ruler is seen as a servant of the people, not just a sovereign authority. Sardesai argues that govemance under Sanatana Dharma places a strong emphasis on social welfare and justice.

The ultimate goal of governance should be the happiness and well-being of the people. This includes providing for the material and spiritual needs of the population, ensuring faimess, and protecting the rights of all individuals, including the marginalized. There is an emphasis on decentralization, which is reflected in the present model of governance of Panchayati Raj and local self-govemment. Most aspects depend upon leadership, and only ethical leadership can ensure that govemance aligns with the principles of Sanatana Dharma and serves the common good. Another important aspect is maintaining a harmonious relationship with nature, which is a central tenet of Sanatana Dharma. Govemance practices should respect and protect the environment, ensuring sustainable development that does not harm the natural world.

Ideas of governance in ancient Indian texts: The Arthashastra, written by Kautilya around the 4th century BCE, is a comprehensive treatise on statecraft, economic policy, and military strategy. It is often compared to Machiavelli's The Prince for its pragmatic and sometimes ruthless approach to governance. The Arthashastra discusses various aspects of governance, including the role of the king, administration, diplomacy, espionage, and warfare. It is recognized for its detailed exploration of realpolitik and has influenced modem political science, especially in the fields of strategic studies and intemational relations.

The Manusmriti, or the Laws of Manu, is one of the earliest works of Hindu law and one of the most authoritative texts on Dharma. It dates back to roughly the 2nd century BCE. It outlines the duties of different social classes (vamas) and stages of life (ashramas), providing a code of conduct for individuals and rulers. While some of its social norms are seen as outdated or controversial, the Manusmriti has been studied for its legal and ethical principles, which have influenced legal thinking and codification in various contexts.

These are two epic narratives central to Indian culture and spirituality. The Mahabharata includes the Bhagavad Gita, a philosophical and spiritual dialogue, while the Ramayana focuses on the life and duties of Rama, a model ruler. The Bhagavad Gita from the Mahabharata provides profound insights into duty, righteousness, and leadership. Its emphasis on Dharma (moral duty) and ethical govemance has influenced not only Indian political thought but also global leaders and philosophers, who draw on its teachings for ethical and moral guidance in govemance..

A 700-verse Hindu scripture that is part of the Mahabharata. It is a conversation between Prince Arjuna and the god Krishna, who serves as his charioteer. The Bhagavad Gita offers a philosophical and ethical guide that emphasizes the importance of duty, righteousness, and the detachment from the fruits of action. Its teachings on leadership, ethical decision-making, and personal duty (Svadharma) have been widely referenced in discussions of moral leadership and govemance.

The Upanishads are ancient Indian philosophical texts that explore the nature of reality, the self, and the universe. They are part of the Vedas and are considered the concluding part of Vedic thought while more abstract and philosophical than prescriptive, the Upanishads' emphasis on the interconnectedness of all life and the pursuit of knowledge and truth has influenced ethical govemance frameworks, promoting principles of justice, equality, and respect for all beings. The Dharma Shastras are a genre of Sanskrit texts that lay down the laws of social and individual conduct. They include texts like the Yajnavalkya Smriti, Narada Smriti, and others.

These texts provide a framework for social order and justice, emphasizing the importance of Dharma (duty) and the rule of law. They have influenced the development of legal codes and the administration of justice in historical India and offer insights into the role of law in maintaining social harmony and justice.

The Panchatantra is a collection of ancient Indian fables and moral tales attributed to Vishnu Sharma. It uses stories of animals to convey moral lessons and practical wisdom.

The Panchatantra is known for its practical wisdom in governance, diplomacy, and human behavior. Its stories have been widely translated and have influenced moral education and ethical decision-making processes around the world.

International Relations Perspective:

B.K. Sarkar's paper, "Hindu Theory of International Relations," published in The American Political Science Review in 1919, explores the principles of international relations as understood and practiced in ancient Hindu civilization. Sarkar draws upon various ancient Indian texts, primarily the Arthashastra by Kautilya, to illustrate how early Indian political thought addressed issues of statecraft, diplomacy, and international conduct. He highlights the six important principles in the paper first, Statecraft and Diplomacy: Sarkar emphasizes that ancient Hindu political theory recognized the complexities of international relations and developed a sophisticated system of statecraft and diplomacy. The Arthashastra, for instance, outlines a pragmatic approach to governance that includes espionage, alliance formation, and the use of force when necessary. It advocates for a balance of power and strategic alliances to ensure the security and prosperity of the state. Second, Doctrine of Mandala: One of the central concepts discussed in the paper is the mandala theory, which suggests that a king's immediate neighbors are likely to be enemies, while those further away are potential allies. This concentric circle model of relationships underscores the importance of geographical proximity in determining diplomatic and military strategies.

Third Realpolitik:

Sarkar points out that Hindu theories of intemational relations were largely based on realpolitik, which prioritizes pragmatic and sometimes ruthless strategies over idealistic or moralistic approaches. The goal of the state is to ensure its own survival and expansion, which may involve deception, strategic marriages, and even betrayal when it serves the state's interest. Fourth, Moral and Ethical Considerations: Although pragmatic, Sarkar notes that Hindu theories did not entirely dismiss moral and ethical considerations. Concepts of Dharma (duty and righteousness) played a role in shaping the behavior of rulers. Even in the conduct of war, certain ethical guidelines, such as fair treatment of prisoners and non-combatants, were emphasized. Fifth, Relevance to Modem International Relations: Sarkar argues that the principles outlined in ancient Hindu texts offer valuable insights into the nature of international relations that are relevant even in the modem context. The emphasis on strategic alliances, the use of soft power, and the balance of power dynamics reflect practices that are still observed in contemporary diplomatic relations. Sixth, Comparative Perspective: Throughout the paper, Sarkar makes comparisons between Hindu theories of intermational relations and those from other cultures, such as the West, demonstrating that the Hindu approach was both unique and highly developed. He suggests that understanding these ancient principles can enhance our comprehension of current international dynamics and contribute to the development of a more nuanced global political theory.

Political Criticism

The Hindu concept of govemance, while influential in ancient times, has faced several political and sociological criticisms. These criticisms often focus on issues related to social justice, hierarchy, and

practical application in the modem context. First, regarding social hierarchy and caste, the Hindu concept of govemance, particularly as articulated in ancient texts, is closely tied to the Vana (caste) system. Critics, referring to Buddhist texts and modem rights theorists, argue that this system entrenches social inequality and restricts mobility by prescribing rigid social roles and duties based on birth. It has been criticized for perpetuating discrimination and inequality. Although modem India has legally abolished caste-based discrimination, its historical roots continue to influence social dynamics. Second, Dharma (moral duty) and Rajdharma (duties of the ruler) may be seen as idealistic and difficult to implement consistently. Critics argue that moral and ethical standards are subjective and can vary widely, making them challenging to apply uniformly in govemance.

Third, Pragmatism of Kautilya's Arthashastra is admired for its strategic insights, it is often criticized for its realpolitik approach, which can justify ruthless and manipulative tactics in govemance. Fourth, Illusionary Democratic PrinciplesAncient Hindu governance models. particularly those emphasizing a strong, centralized ruler, do not align well with modem democratic principles. The concentration of power in a single ruler or a small elite is often criticized for lacking accountability and representation. Whereas Modem democratic systems emphasize separation of powers, checks and balances, and broad-based participation, which contrast with the more autocratic elements of traditional Hindu governance. Fifth Diverse Societies Hindu govemance was formulated in the context of ancient Indian society, which was relatively homogeneous in terms of religious and cultural practices. Applying these concepts to diverse and pluralistic modem societies can be problematic.

Traditional Vs Liberals Debate:

The debate over the relevance of ancient Indian texts to modem global governance and politics has sparked significant discussion among scholars and political theorists. This debate often involves two main perspectives: the traditional theorists, who argue that these ancient texts provide foundational insights for contemporary govemance, and the liberal theorists, who challenge the applicability of ancient, culturally specific texts to modem, pluralistic, and secular contexts. Traditional Theorists' Perspective:
Core Argument: Traditional theorists assert that ancient Indian texts like the Arthashastra, Manusmriti, and the Bhagavad Gita offer timeless wisdom that can be adapted to modem govemance. They believe that these texts provide a moral and ethical foundation for leadership, diplomacy, and justice, which transcends cultural and temporal boundaries. For instance, the principles of Dharma (duty and righteousness) from the Bhagavad Gita are seen as universally applicable to leaders striving for ethical govermance.
The Arthashastra's strategic use of alliances, espionage, and the mandala theory is cited as a precursor to modem concepts of realpolitik and balance of power. Similarly, the ethical guidelines for war found in the Mahabharata are seen as early examples of just war theory, emphasizing the protection of non-combatants and ethical conduct even in conflict.

Traditionalists often emphasize the continuity of cultural and civilizational values. They argue that modem governance systems, particularly in countries with deep historical ties to these texts (e.g., India), should draw from their indigenous intellectual traditions rather than wholly adopting Westem models of governance. Liberal theorists challenge the applicability of ancient texts to modem governance. They argue that these texts were created in specific historical, social, and cultural contexts that differ vastly from the diverse, democratic, and secular nature of modem states. Therefore, they question the relevance of applying ancient principles to contemporary political systems, which must accommodate pluralism, human rights, and universal suffrage.

Liberals often criticize traditionalist interpretations for potentially promoting a homogenized, majoritarian view of governance that might marginalize minority perspectives and secular values. They argue that ancient texts might reflect hierarchical and patriarchal values that conflict with modem notions of equality, individual rights, and democracy. For example, the Manusmriti has been critiqued for its caste-based social order, which contrasts sharply with contemporary egalitarian ideals. From a liberal viewpoint, governance should be rooted in universal principles of human rights, democracy, and secularism. They emphasize the importance of separating religion from state affairs to ensure inclusive govemance that respects diverse beliefs and lifestyles.

The arguments of both traditionalists and liberals have gained prominence, but their influence varies based on context and audience. In academic and intellectual circles, liberal arguments are often more widely accepted, especially in global discussions that emphasize universal human rights and secular govemance. However, traditionalist arguments have gained traction in contexts where there is a resurgence

of interest in cultural heritage and indigenous knowledge systems. In India, for instance, there is a growing movement that seeks to incorporate traditional values into govemance and education, reflecting a desire to reclaim and celebrate cultural identity Those who are inclined toward cultural nationalism or who advocate for decolonizing knowledge may find traditionalist arguments appealing. They appreciate the assertion that non-Westem cultures have valuable contributions to make to global governance discourses. who prioritize universal human rights and modem liberal values may find liberal critiques more compelling. viewing them as necessary to safeguard inclusivity and equality.

the acceptance of these arguments often aligns with broader ideological trends. In countries with strong nationalist movements, there is a push to integrate traditional philosophies into the political and legal framework. For example, the current political climate in India, under the influence of the Bharatiya Janata Party (BJP), often emphasizes the integration of Hindu cultural and religious values into public life and policy. In contrast, in more secular or liberal political environments, there is a preference for frameworks that emphasize separation of religion and state and universal human rights.

Outcomes of the Debate:

In some countries, particularly India, traditionalist perspectives have influenced policies and governance. There is a visible effort to revive and incorporate ancient Indian principles into contemporary law and govemance, whether through education reforms that emphasize ancient texts or legal reforms that reference traditional values. This has led to a nuanced approach where ancient principles are sometimes invoked alongside modem legal norms.Internationally, while traditionalist perspectives contribute to the richness of global govenance discourse, liberal perspectives remain dominant, particularly in international organizations and forums that emphasize human rights, democracy, and secularism. However, there is a growing recognition of the need to appreciate and understand diverse cultural contributions to govemance, which has led to a more inclusive approach to global political theory. The ongoing debate suggests a potential synthesis, where the ethical and philosophical insights of ancient texts are integrated with modem governance frameworks that uphold human rights and democratic values. This could lead to governance models that are both culturally resonant and universally just, addressing the needs of diverse populations while respecting historical and cultural contexts.

Conclusion :

This paper highlights the complex interplay between ancient Hindu govemance principles and contemporary legal frameworks. By examining how these principles align with or challenge modern legal norms, it underscores the potential for integrating traditional wisdom into current governance practices. While traditional perspectives offer valuable ethical insights, they also face criticisms related to social justice and applicability in diverse, democratic contexts. The debate between traditional and liberal theorists reveals ongoing tensions but also opportunities for synthesis. Future govemance models may benefit from incorporating culturally resonant values while upholding universal principles of justice, equity, and human rights.

References:

1. Goel, A. (2003). Good governance and ancient Sanskrit literature. Deep and Deep Publications.
2. Mukherjee, J. (2010). Revisiting good governance in ancient Indian political thought. The Indian Journal of Political Science, 53-58.
3. Sharma, S. K. (2005). Indian idea of Good Governance: Revisiting Kautilva's Arthshastra. Dynamics of Public Administration, 17(1to2), 8-19.
4. Sardesai, V. S. (2008). Governance under Sanatana Dharma. Readworthy.
5. Sarkar, B. K. (1919). Hindu Theory of International Relations. The American Political Science Review, 13(3), 400-414. https://doi.org/10.2307/1945958
6. Singh A.P. "Ancient Indian Knowledge Systems and their Relevance Today Emphasis on Arthaśāstra [Available Online] Accessed on With an 12 June 2024 URL: https://indiafoundation.in/articles-and-commentaries/ancient-indian-knowledge-systems-and-their-relevance-today-with-an-emphasis-on-arthasastra

Discourse of Traditional Indian knowledge System and Relevance of its inclusion in Contemporary Education

Miss Nisha Verma

Department of English,
Govt. Adarsh Girls College,
Sheopur, Madhya Pradesh

Abstract :

Education is widely acknowledged as the comerstone of a nation as it fosters social, moral, cultural, and spiritual values with wisdom. Educationplays a pivotal role in sculpting the trajectory of any country's future. In this era when global landscape is evolving very swiftly it has become imperative to rejuvenate the old knowledge system to align with contemporary trends of education and understand the need of the present scenario. The ancient Indian knowledge system offers a valuable insight and perspectives that can enrich contemporary education.Inclusion of our Indigenous knowledge system will not only promote holistic leaming with the integration of physical,mental and spiritual aspects but will demonstrate the 'Indian way" of doing things in the world. This paper endeavors to find the present need to revitalize the Indian education system through the integration of the ancient Indian knowledge systems to explore the scientific philosophical and cultural heritage of India with an interdisciplinary approach.

Keywords:

Ancient Knowledge system, Reconfiguring Education, Veda, Holistic approach

Introduction :

India with its rich tapestry of art, culture, history and diversity has been recognized as a great place for education. The ancient education system in India,dating back thousands of years is a great testament to the rich heritage and intellectual legacy of the Indian subcontinent. The ancient education systemin India deeply rooted in its cultural and philosophical heritage is one of the oldest and most revered systems of education in the world.Education in ancient India was primarily oral with knowledge transmitted from pedagogue to disciple through dialogue recitation, and memorization. Text was memorized verbatim ensuring the preservation and transmission of knowledge across generations. Since ancient times, India has had a highly rich, illuminousheritage of education and study, particularly during the Renaissance, which is considered to be the pinnacle of Indian civilization. The three greatest educational achievements of this era were the decimal system. the epics of Sanskrit, and the advancements in astronomy, mathematics, and metallurgy. The Indian Information System (IKS) is an organized and systematic approach to transmitting knowledge from one generation to the other. distinguishing itself from being merely a tradition, it is a process of knowledge transfer. Grounded on the Upanishads, Vedas, Up Vedas, and other Vedic literature, the IKS is a fundamental concept acknowledged by the National Education Policy (NEP-2020). The three primary comerstones of the Indian knowledge systems-Jnan (knowledge), Vignan (science), and Jeevan Darshan (life philosophy) have emerged as a result of a dynamic interaction among knowledge, careful observation, thorough study, and analytical thinking. This tradition of validation and real- world application has had a significant influence on a variety of industries, including trade, commerce, law, education, and administration.

According to (Mundhe, 2023) One of the key aspects of the Indian knowledge system is its holistic approach towards life. It acknowledges the interconnectedness of all aspects of existence from the individual to society, from human beings to nature, and from the physical to the spiritual. This holistic approach is reflected in various Indian practices, such as Ayurveda, Yoga, and Vaastu Shastra, which focus on maintaining balance and harmony within and with the environment. The Indian knowledge system significantly emphasizes gaining knowledge through personal observation and experience. This method is mirrored in the teachings of the ancient Indian thinkers and sages, who promoted introspection and critical thinking as means to develop wisdom and insight. The significance of oral tradition- in which information is transmitted through narratives, dialogue, and arguments is also emphasized.

ANCIENT EDUCATION SYSTEM IN INDIA- A WAY OF LIFE:

The Indian knowledge system, also known as the Indian school of thought or Hindu philosophy, encompasses a huge body of information, beliefs, and practices established and passed down in the Indian subcontinent from antiquity. This knowledge system is profoundly founded in ancient Vedic scriptures and has evolved over thousands of years to shape India's cultural, intellectual, and spiritual landscape (Kapil Kapoor, 2020).

Starting approximately 1500 BCE, the Vedic era was the time when the Indian knowledge system originated. During this period, Hinduism's earliest books, the Vedas, were written. They are regarded as the core of Indian philosophy and wisdom. Before the Vedas got downin text, they were transmitted orally for millennia between successive generations as a collection of hymns, rituals, and mantras. According to Mark (2020), they are filled with a wealth of information regarding cosmology, spirituality, rites, offerings, and ethics. There were both formal and informal systems of learning in ancient India. Home, temples, pathshalas and gurukuls were important places to impart Indigenous education. There were elders in dwellings, villages, and temples who guided young children to embrace religious practices. Temples were great centres of leaming as they spreading knowledge about ancestral system. For further education, students visited universities and viharas. Students retained meditated, and talked about the knowledge that was provided in class because the majority of instruction was given verbally. Gurukuls, also known as ashrams, were the traditional schools of learning. Many of these were named after the sages.

These educational institutions, used to be surrounded by beautiful serene forests, were the residential places of learning where hundreds of students coming from diverse comers studied together. Even in the early Vedic era, women had access to education. We come across allusions to a number of notable female Vedic academics, including Maitreyi. Viswambhara, Apala, Gargi, and Lopamudra. The shishyas coexisted with their 'Gurus helping them in day-to-day life with the objectiveto have complete leaning, leading a disciplined life and realising their inner potential, till they achieved their goals while pursuing their education in different disciplines like history, art of debate, law, medicine, etc.The gurukul was also the place where the relationship of the guru and shishya strengthened with time. Enriching one's inner facets of personality along with the extemal aspects of the discipline was prioritized.

During this period many monasteries or viharas were set up for monks and nuns to meditate, debate and discuss with the leamed for their quest for knowledge. Around these, other educational centres of higher leaming developed, which attracted monastery: a place where people live under religious vows. Ancient education system of The Jataka tales, accounts given by Xuan Zang and I-Qing (Chinese scholars), as well as other sources tell us that kings and society took active interest in promoting education. As a result, numerous well known educational centres came into existence. Among the most notable universities that evolved during this period were situated at Takshashila, Nalanda, Valabhi, Vikramshila. Odantapuri and Jagaddala. These universities developed in connection with the viharas. Benaras, Navadwip and Kanchi universities developed in connection with temples and became centres of community life. These institutions catered to the needs of advanced level studentsof higher leaming. Here they developed their knowledge by mutual discussions and debates with renowned scholars.In addition, occasional summoningwas held by a king to a gathering. inwhich the scholars of the country of various viharas and universities would meet, debate and exchange their views.

Relevance of Indian Knowledge System in the Present Scenario:

Indian culture enjoys an incredible legacy of intellectual texts, the world's richest collection of manuscripts, and a well-documented heritage of texts, intellectuals and schools covering an array of subjects, all of which attest to its high regard for knowledge. Lord Krishna guides Arjuna in the Shrimad Bhagwad Gita, 4.33,37-38, that knowledge is the greatest means of self-purification and liberation. India has a long history of knowledge that has continued unbroken, like the Ganges River. Indian knowledge systems have a strong foundation in Indian culture, philosophy, and spirituality and have evolvedthrough thousands of years. Integrating aspects of the Indian knowledge system into contemporary education requires a thoughtful approach. ensuring that it complements and enhances current educational practices rather than simply adding to the curriculum. The relevance of the Indian knowledge system in present education can be seen through several lenses:

Diverse Perspectives:

Indian knowledge systems offer a rich tapestry of numerous perspectives since they blend ancient texts, beliefs and customs from different places and cultures. By incorporating these, the curriculum can be enhanced by offering distinct point of view on subjects like science, history and ethics.

Holistic Education with Interdisciplinary Learning:

A comprehensive approach to education that integrated intellectual, moral, and spiritual growth was frequently stressed in traditional Indian education. This can be beneficial in contemporary educational systems that aim to create complete individuals by encouraging students to develop their emotional intelligence and ethical ideals along with to their academic aptitudes. Moreover,an interdisciplinary approach is frequently reflected in Indian knowledge systems. For example, an extensive spectrum of subject matter, from mathematics to metaphysics, is covered in ancient texts like the Vedas and Upanishads. Due to this interdisciplinary nature, contemporary educational systems can be inspired to dismantle academic silos and encourage a more integrated approach to leaming.

Sustainable Practices :

Indian knowledge systems emphasized the interdependence of all beings to attain sustainable living practices including the idea of Vasudhaiva Kutumbakam"(the world is one family). Ancient India's sustainable practices were based on great respect and deep affection with the environment and ecological inter-dependence as many traditional Indian practices emphasized harmony with nature and sustainable living. By addressing current concems like environmental sustainability and climate change, these ideas can be incorporated into modern education to help students recognize the significance of ecological balance.

Mathematical and Scientific Contributionswith Language and Literature:

Ancient Indian scholars made significant contributions to mathematics and science. For example, the concept of zero and the decimal system originated in India. Without which most modem scientific discoveries would have been impossible Indian classical literature provides insightful perspectives on society, governance, and human nature. It includes works written in Sanskrit, Tamil, and other languages. Students' literary and cultural perspectives can be expanded by including these works in literature studies.

Cultural Heritage& Ethics and Values:

A greater understanding of cultural heritage and identity can also be fostered by comprehending Indian knowledge systems. This is especially important in today's globalized society, where it is essential to preserve and value cultural diversity. The topics of ethics, morality, and individual accountability are central to many Indian philosophical traditions. Education that incorporates these ideals can assist in addressing difficulties like moral decision-making, societal responsibility, and character development.

Stress management :

Yoga is a comprehensive approach to internal, physical, and spiritual well-being that has its roots in ancient India. It comprises ways like asanas(postures), pranayama(breath control), and contemplation that have been shown to lower stress, promote internal health, and increase general heartiness. These ways are especially material in the moment's presto-paced, stressful ultramodem actuality.

Spiritual Growth:

Spiritual Growth perceptivity into the nature of reality, mindfulness, and thetone are handed by Indian knowledge systems like Vedanta, a philosophical frame grounded on the ancient books known as the Vedas. similar training give advice on tone- enhancement, tone- mindfulness, and the pursuit of meaning and purpose, all of which are material in the ultramodem world where so numerous people are looking for lesser fulfilment.

Conclusion :

Incorporating traditional education with current education can enrich the leaming experience, preserve cultural heritage, and foster holistic development. By combining the strengths of both approaches, we can create a more comprehensive and inclusive education system that prepares students for success in all aspects of life. By embracing the wisdom of the past and the innovations of the present, we can empower future generations to thrive in an ever-changing world. Let us strive to integrate traditional and modem education to create a harmonious blend of knowledge, skills, and values that will benefit individuals and society as a whole."

References:

1. Mundhe, E. (2023). The wisdom of Bharat: An exploration of the Indian knowledge system. Dr. Eknath Mundhe S. M. Joshi College, Hadapsar, Pune-28, Maharashtra, India. https://www.ijrah.com/index.php/ijrah/article/view/516/663
2. Ministry of Education, Government of India. (n.d.). Education. www.education.gov.in
3. Indian Knowledge Systems. (n.d.). About IKS. https://iksindia.org/about.php
4. National Council of Educational Research and Training (NCERT). (n.d.). The Vedas. https://ncert.nic.in/textbook/pdf/heih111.pdf
5. Mark, J. J. (2020, June 9). The Vedas. World History Encyclopedia. https://www.worldhistory.org/The_Vedas/
6. Vermani, S. (n.d.). Relevance of Indian knowledge system in the present scenario. LinkedIn. https://www.linkedin.com/pulse/relevance-indian-knowledge-system-present-scenario-sakshi-vermani
7. Vermani, S. (n.d.). Relevance of Indian knowledge system in the present scenario. LinkedIn. https://www.linkedin.com/pulse/relevance-indian-knowledge-system-present- scenario-sakshi -vermani
8. Kapoor, K., & Kapoor, A. K. (2020, April 11). Indian knowledge systems. Indian Institute of Technology Gandhinagar. https://iks.iitgn.ac.in/wp- content/uploads/2016/01/Indian -Knowledge-Systems-Kapil-Kapoor.pdf

Empowering Futures: The Crucial Role of Vocational Education Today

Mrs. Archana Yadav
Department of Botany,
Govt.S.M.S Model Science college,
Gwalior (MP)

Mr. Ravi Pratap Yadav
Department of Zoology,
Govt. Adarsh Girls College,
Sheopur (MP)

Abstract :

Vocational educationis a type of training program that focuses on teaching specific trades, skills, or crafts that are directly related to a particular occupation or career. Unlike traditional academic education, which often emphasizes theoretical knowledge, vocational education is more practical and hands-on, preparing students for a specific job or field.It is a medium through which skill development comes to person that can contribute to improve lifestyle. Vocational education is a milestone for the educational and skill development of the youth and it is important for soft skills, entrepreneurship, financial and digital literacy The present article highlights the significance of vocational education in present scenario.

Keywords:

Vocational education, NEP 2020, Job opportunity

Introduction :

In 2020, the National Education Policy (NEP-2020) introduced the concept of 'Vocational Education' into undergraduate courses throughout India, emphasizing the significance of specific subjects that can open up promising career opportunities for students. Education is not just the absorption of book-based knowledge; it also involves exploring the practical applications of this knowledge. This becomes highly beneficial when these subjects can become an integral part of a student's future livelihood. From this perspective, the inclusion of such vocational subjects in the curriculum, as initiated by the Government of India, represents a significant step toward practical education.

Vocational education is a major instrument of social changes therefore; Government of India has been making efforts to increase facilities in higher education. Under the vocational education a large number of fields such as agriculture, industry, medicine and public health, arts and crafts home management trade and commerce are included. Vocational education is provided for various job opportunities in many sectors such as agriculture, tourism, food processing and beverage, computer networking, banking and finance, fashion designing, property management, etc. Students can choose from diverse courses available as per their skills and interest. Vocational education can promote entrepreneurship by preparing students for the start-up and management of their own businesses in various sectors like carpentry, hairstyling, or culinary arts.

Vocational education plays a crucial role in the present scenario by addressing the evolving needs of the job market, bridging the skills gap, and contributing to economic development. Here are some key roles of vocational education today:

1. Bridging the Skills Gap: Vocational education provides students with specific skills tailored to various industries, such as healthcare, information technology, automotive, construction, and hospitality. This targeted training is designed to meet the current demands of employers, ensuring a better match between the skills taught and those required in the workforce.

2.Promoting Employment and Economic Growth: By equipping individuals with practical and technical skills, vocational education enhances employability and productivity, contributing to economic growth. It supports sectors that are critical to the economy and helps in creating a skilled workforce that can drive innovation and efficiency.

3.Supporting Lifelong Learning and Career Development: Vocational education encourages

lifelong learning, allowing individuals to continuously upgrade their skills to adapt to changing job requirements and technologies. This adaptability is crucial in a rapidly evolving job market, where continuous leaming and skill development are key to career advancement.

4.Reducing Youth Unemployment: By offering practical training that can lead to immediate employment, vocational education is particularly effective in addressing youth unemployment. It provides young people with the necessary skills to enter the workforce directly, which is especially valuable in countries with high rates of youth unemployment.

5. Fostering Entrepreneurship and Innovation: Vocational education often includes training in entrepreneurship, equipping students with the skills needed to start and manage their own businesses. This entrepreneurial training is vital for fostering innovation, especially in regions where traditional employment opportunities may be limited.

6. Providing Alternative Pathways to Higher Education: Vocational education offers an altemative to the traditional academic route, providing students with a practical education that can lead to both direct employment and further study. Many vocational programs have pathways to higher education, enabling students to advance their careers through further academic or professional qualifications.

7. Enhancing Social Mobility and Inclusion: By making education more accessible to diverse groups, including those who may not thrive in traditional academic settings, vocational education promotes social inclusion. It offers a practical, hands-on approach to leaming that can be more engaging for students who prefer a different leaming style.

8. Adapting to Technological Advancements: Vocational education is increasingly incorporating new technologies and digital tools, preparing students for careers in fields such as IT, robotics, and digital marketing. This focus on emerging technologies ensures that the workforce is prepared for the jobs of the future.

9. Regional Development and Rural Employment: Vocational education can play a significant role in regional development by providing skills that are tailored to the local economy. It supports rural employment and development by training individuals in skills that are in demand locally, reducing migration to urban centers.

Initiative of Government of India for job opportunity:

Vocational education offers job opportunities in rural areas and small towns, reducing the migration of youth to major cities. Vocational education or vocational education training (VET) is known as career education that prepares leamers for job opportunity. Govemment of India initiates many schemes to promote vocational education for youth such as Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojna, rojgar mela. vocational education training for women, Degree and Diploma programs are included in technical education in field of agriculture, architecture engineering, technology, management, town planning, pharmacy hotel management which can provide employment opportunities to the youth in these field. The Government of India is implemented the Vocationalisation program in School Education under the Samagra Shiksha. The scheme aims to integrate vocational education with general academic education with an aim to prepare educated, employable and competitive human resource for various sectors of the economy and the worldwide market. Pradhan Mantri Kaushal Vikas Yojana is implemented by the National Skill Development Corporation (NSDC). This skill certification program's aim is to make accessible for youthful Indians to enroll in skill training that is relevant to their career and will improve their probability of getting a better living.

Conclusion:

conclusion, vocational education is a vital component of the education system that addresses the specific needs of the labor market, promotes economic development, and supports personal and professional growth. Its focus on practical skills, employability, and lifelong learning makes it essential in today's rapidly changing world.

References:

1. National Vocational Education Qualification Framework (NVEQF). (2019). retrieved from: https://www.education.gov.in.
2. NEP, 2020. National Education policy 2020 Ministry of Education, Government of India.
3. https://www.educationworld.in/nep-2020-implementation-challenges/

SOCIAL EQUALITY AND EMPOWERING WOMEN STRENGTHEN AS A ACCOUNTING PROFESSION: AN OVERVIEW

Dr. Mahendra Kaithwas

Department of Commerce,
Govt. Adarsh Girls College
Sheopur (Madhya Pradesh)

Abstract :

Educate a man and you educate an individual. Educate a woman and you educate a family, so rightly goes the saying which emphasizes on empowerment of women as the need of the hour. And as Empowerment Begets Empowerment, it is now widely and rightly believed that if we empower women, we actually empower ourselves. A study has found a direct relation between gender-inequality and slump in economic growth. World Economic Forum finds a strong correlation between gender equality and national competitiveness. As such, it is being increasingly believed that women need to be given larger share of responsibility in the economic mainstream. It is now a well acknowledged fact that women remain the largest untapped reservoir of talent in the world.

Keywords:

Empowerment, Accountancy, profession, WMEG.

1. INTRODUCTION

"There is no chance for the welfare of the world unless the condition of woman is improved. It is not possible for a bird to fly on only one wing...There is no hope for that family or country where there is no estimation of women, where they live in sadness. For this reason, they have to be raised first," so rightly says Swami Vivekananda, adding that woman has suffered for eons, and that has given her infinite patience and infinite perseverance. These words of wisdom hold true for India, whose about half the population comprise women. Although with the education and awareness, women have come a long way in India, a lot more remains yet to be accomplished by them. With the exception of a few high achievers, largely the women are still underrepresented in professional and public life. In the UN Human Development Report's Gender Inequality Index, India is at 125th position, out of 159 countries. In Gender Gap index (World Economic Forum), its position is 108th out of 144 countries. Even when some women are doing well, women's participation in the work force is low at 27% in India. However, slowly but surely the Indian women are turning the tide in their favour. It is undeniable that women empowerment in the corporate world has a crucial direct impact on the economic growth and simultaneous national development. In India, where Women representation in the corporate scenario stands at 30.55%, the reservoir of women leadership is certainly untapped. But with many organisations leading the change in the past decade, India's corporate world is inclusive of women holding significant positions in top-notch organisations.

2. TREND IN LITERACY RATES

Accepting a recommendation of the Kotak Committee on Corporate, the Securities and Exchange Board of India (SEBI) has also decided that there should be at least one woman independent director in the top 500 listed entities by market capitalization by April 1, 2019 and at least one woman director in the top 1,000 listed entities, by April 1, 2020. According to a reliable report, a total of 46.8% of all enrolled undergraduate students in India are women while 40.7% of all enrolled PhD students are women.

3. INDIAN WOMEN IN ACCOUNTANCY

Indian Women in Accountancy the women of 21st century are willing to explore all possible professional qualifications. But increasingly, the accountancy qualification is getting their special attention not only because of it offering rich fiscal and social rewards, reasonable flexibility and sure-shot employability, but also because of it being very cost-effective. Over the years, growing number of girls coming from humble family backgrounds are making big difference to their family and society through this route. Accounting is a powerful profession and can empower women to a great extent. Accounting profession offers various options to choose from and provides a definitive edge to the holder of this

qualification. Accountants can choose to join a multinational firm and enjoy secure employment with admirable pay packages and high professional status. Accountants can choose to run their own firms, venturing their entrepreneurial spirit and enjoy independent work environment. Thus, accountants can branch out into private equity, finance functions in corporate or even entrepreneurship. With such diverse career options and great recognition, accounting is a healthy pipeline for young women entering the profession.

Accounting is a powerful profession and can empower women to a great extent. Accounting profession offers various options to choose from and provides a definitive edge to the holder of this qualification. Accountants can choose to join a multinational firm and enjoy secure employment with admirable pay packages and high professional status. Accountants can choose to run their own firms, venturing their entrepreneurial spirit and enjoy independent work environment.

However, the situation was not the same in the formative years of formal accountancy in India, when it was generally regarded as a male only profession. It did not at all sound unusual when the first woman Chartered Accountant Ms. Ethel Watts called accountancy an "eccentric choice" of profession for women in 1924. The situation in India at that time was no exception to that remark. But with Ms. R. Shivabhogam of Chennai and Ms. Shirin K. Engineer of Mumbai for the first time becoming woman Chartered Accountants in 1933, the story started changing in India. Having developed interest in accountancy while being in jail for participating in non-cooperation movement, MsShivabhogam is widely regarded to have paved way for other women to join accountancy. This trend has attained much momentum ever since the turn of 21st Century. In the year 2000, women constituted only 8% of ICAI membership while their strength increased to 20% in 2012 and 22% in 2014.

In the year 2000, women constituted only 8% of ICAI membership while their strength increased to 20% in 2012 and 22% in 2014. Today (as on 2019), we can boast of women comprising more than 25% of our total membership of 287388. Out of these women members 61756 are ACAS and 10998 are FCAs.

These include supporting them to take up positions of independent directors in line with the provisions of the Companies Act 2013, providing them flexi working options, a dedicated portal for women members, comprehensive programmes on upcoming technical and non-technical topics, specialized Training Programmes, IT Workshops and Faculty Development Programmes, etc.

In the spirit of empowering women members, the ICAI has been keeping women-member specific initiatives high on its agenda. Through a dedicated Women Members Empowerment Group, ICAI has been taking several measures to develop capacities of ICAI's women members to effectively utilize their professional knowledge and expertise.

1. World class training for professional enhancement through seminars, workshops, Conferences, Webinars and hands on training: WMEG (erstwhile Committee) has been organizing a series of programmes and webcasts since its inception in 2014, for professional enhancement of women members. These programmes dwell upon pertinent topics in the areas of topical and emerging interests in global economy, which were both technical as well as non-technical women centric topics.

2. Training programmes to equip members with latest trends in technology and business: WMEG has been organizing IT workshops for women members. The Workshops aim to teach hands-on skills to participants, provide learning about new developments in this field and to enhance their IT skills which they require in the profession.

3. Programmes to help members specialize in emerging areas of audit, accounting and consulting: WMEG has been regularly organizing various programmes for professional enhancement and capacity building of women members.

4. "Train the Trainer" Programme to train & prepare the Women Members for the role of faculty and to provide them a platform to enhance their general management & communication skills. The major focus of this training programme is on upgrading the teaching, training, and research skills of trainers especially those who have not had an opportunity to acquaint themselves with recent developments in teaching methods.

5. Creating specific professional opportunities for women and work towards their empowerment: WMEG endeavours to give special attention to Women Members to enable them to effectively utilize their professional knowledge and expertise in the profession of Chartered Accountancy. WMEG encourages women members to involve themselves as Resource Person in various women empowerment programmes, in GMCS & Orientation Programmes, Certificate & Post Qualification Courses and also to act as Examiners, Observers, Paper Checkers, Technical Reviewers, etc., in a manner that the work schedules are flexible. WMEG endeavours to train Women Members for the role of Independent Directors in the board of companies, under the provisions of the Companies Act, 2013. For the same, the Committee has been organizing programmes on Women Independent Directors and programmes wherein sessions on Independent Director are taken up by eminent faculty.

6. Portal for Women Members (www.womenportal.icai.org) The WMEG also has a dedicated portal "Women Portal" running under its aegis which aims to provide a platform to women members to articulate their views and concerns pertaining to Chartered Accountancy profession. The portal is running with an objective to provide flexi working/part time working opportunities to women members.

According to a global study, the basic traits required for success in accounting profession are naturally found in women. "Some of the natural traits of women making them able accounting professionals are: honesty, integrity, ethical conduct, attention to details, accuracy, accountable, effective communication skills, people centric, etc," the study says. The track record of the performance of women in the professional world has proved that they don't need any preferential treatment, but only need equal opportunity to work and excel. Indian women need to be encouraged mainly because their immense potential still remains untapped and uncapitalised. Let's recall what Mahatma Gandhi said: You must be the change you wish to see in the world.

4. WOMEN IN INDIA AND RELATED REGULATORY FRAMEWORK

Throughout history, women have been battling against patriarchy and a predominantly misogynistic society. And the struggle is now paying off with ever-increasing number of women stepping out to join the economic and social mainstream. Though India today has the largest women workforce (27% of total workforce) after China, they are mostly performing in the sectors of agriculture and construction and as domestic help. We urgently need to address this issue. Our Constitution too strongly supports the cause of gender equality by empowering the State to adopt strong measures in favour of women. While Article 14 of the Constitution gives them equal rights in political, economic and social spheres. Article 15 prohibits us to discriminate on the basis of gender. Article 39 asks for equality in remuneration. Contract Labour (Abolition and Regulation) Act and Rules, 1970 recommends separate provision for utilities and fixed working hours for women.

As per Section 46(b) and 50 of the Employees State Insurance Act, 1948, insured women are entitled to claim maternity benefits on account of pregnancy, premature birth of child or miscarriage. As a result of a vibrant women's movement in the last 50 years, policies to advance human rights for women in India are substantial and forward-thinking, such as the Domestic Violence Act (2005), and the 73rd and 74th Amendments to the Constitution that provide reservations for women to enter politics at the Panchayat level. There are multiple national and state level governmental and non-governmental mechanisms such as the Women's Commission to advance these policies. While the law of the land is doing everything possible to create a gender-sensitive work environment for women professionals, it also becomes a responsibility for members of the noble profession of accountancy to empower women in profession, and recommend the same to industry.

5. CONCLUSION

The aims at empowering its women members and students not because they are discriminated or less capable, but because their professional capacities yet remain largely unutilized. Women can be Indian accountancy profession's competitive advantage, if they are brought to the fore and core of our profession. Some basic limitations related to the women professionals like inflexible working practices, family and work life balance, and issues encountered during pregnancy and motherhood, need to be addressed. Indeed, the empowerment and increased presence of women in Indian accounting fraternity can further empower and strengthen the profession and the society as a whole.

REFERENCES

1. Women and Men in India, A statistical compilation of Gender related Indicators in India (2018)
2. Reecha Upadhyay, WOMEN'S EMPOWERMENT IN INDIA An Analytical Overview (2016)
3. http://www.accountabilityindia.org/pdf/Panchayat Brief1.pdf 4.
   http://archive.idea.int/women/parl/studies4a.htm
5. http://www.onlinewomeninpolitics.org/india/indian.pdf

व्यक्तित्व विकास मनोवैज्ञानिक अध्यन

डॉ. योगेश कुमार बाथम
राजनीति शास्त्र विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविधालय
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

डॉ. उर्मिला बाथम
अर्थशास्त्र विभाग,
शासकीय प्रधानमंत्री एक्सीलेंस कॉलेज
बापू डिग्री, नौगाँव, छतरपुर
(मध्य प्रदेश)

शोध सार : -

संसार में ऐसे व्यक्तित्व वाले लोग भी होते हैं, जिनका जीवनकाल असफलता-अप्रसन्नता और सामाजिक अस्वीकृति से भरा हुआ होता है, लेकिन आधुनिक युग में खुशमिजाज व्यक्तित्व वाले व्यक्ति का बहुत महत्व है। उसे अधिकांश लोग पसन्द करते हैं। वह सभी के साथ समायोजित होने में सफल रहता है। उसके जीवन में सफलता, खुशियाँ और सामाजिक स्वीकृति जब चाहे तब मिलती रहती है। इन्हीं गुण और विशेषताओं से व्यक्ति जो भी चाहे वह सब कुछ अर्जित कर सकता है। यह भी तब ही सम्भव है जब वह इसके लिए अन्तर्मन से सतत् प्रयास किया जाए। आज किशोरावस्था से युवावस्था तक के व्यक्ति में अपने व्यक्तित्व को उन्नत करने की बहुत चाह रहती है। प्रत्येक आयु वर्ग के ww स्त्री-पुरुष अपने व्यक्तित्व को बेहतर बनाना पसन्द करते हैं और वे इस दिशा में प्रयास भी कर रहे हैं।

उद्देश्य : -

इस शीर्षक का उद्देश्य व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के विकास में प्रेक्षाध्यान के महत्व व उपयोगिता को उजागर करना है। व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाले अनेक w कारक तत्व हैं। उसमें से व्यक्तित्व के अपने अधीन विशेषकर मनोवैज्ञानिक कारक तत्व होते हैं। उनका विकास चाहे तो व्यक्ति स्वयं कर सकता है, इससे वह अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली तथा और अधिक उन्नत बना सकता है। अतः प्रस्तुत शोध-पत्र में हम इसका अध्ययन करेंगे। व्यक्तित्व को जानने के लिए हजारों साल से विद्वानों और जनमानस में यह रुचि रही है।

भारतीय चिन्तनधारा में मानव व्यक्तित्व के सिद्धान्तों का विवेचन, वेद-उपनिषद, सांख्य योग, जैन आगम और बौद्ध पिटक में विस्तृत रूप से हुआ है। यहाँ मुख्यतः व्यक्तित्व को जीवात्मा कहा गया है। इसी प्रकार पश्चिम में भी व्यक्तित्व सिद्धान्त का इतिहास पुराना रहा है। इसकी उत्पत्ति पौराणिक, ग्रीक जैसे प्लेटो तथा अरस्तू द्वारा मानव स्वभाव एवं व्यवहार के बारे में व्यक्त किए गए विचारों से हुई है।

वर्तमान युग में आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का विभिन्न दृष्टिकोण से विस्तार पूर्वक अध्ययन किया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज व्यक्तित्व के बारे में अनेक सिद्धान्त प्रचलन में है। सिद्धान्त वस्तुतः किसी विषय-वस्तु से सम्बन्धित एक दृष्टिकोण से किए गए विचारों का संग्रह है। दूसरे शब्दों में व्यक्तित्व के जितने भी सिद्धान्त हैं वे वास्तव में विभिन्न प्रकार के दृष्टिकोणों एवं विचारधाराओं के प्रतिनिधि हैं।

व्यक्तित्व का अध्ययन करते समय किसी एक सिद्धान्त को समग्र रूप से सही नहीं माना जा सकता। कोई सिद्धान्त अपने आप में पूर्ण नहीं है। सभी सिद्धान्तों में कुछ न कुछ विशेषताएँ हैं और उनकी अपनी कुछ सीमाएँ भी हैं। हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि प्रत्येक सिद्धान्त में जो-जो विशेषताएँ हैं उन्हें सही प्रकार से व्यवस्थित कर लें, इसके लिए

- व्यक्ति की उन बातों को जो ठीक लगे उन्हें व्यक्ति में देखने का प्रयास करें।
- निरीक्षण के द्वारा प्राप्त तथ्यों का हम विधिवत् वर्गीकरण करें।
- उनके आपसी सम्बन्धों को समझने का प्रयास करें।
- अन्त में देखें कि वे व्यक्तित्व के स्वरूप को किस प्रकार स्पष्ट करती हैं।

व्यक्तित्व के अध्यान क्षेत्र में सर्वप्रथम व्यवस्थित अध्ययन मनोचिकित्सा शास्त्रियों द्वारा ww प्रारम्भ किया गया। ₹फ्रायड का इस दिशा में योगदान अधिक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय रहा। सन् 1980 से मनोविज्ञान के क्षेत्र में व्यक्तित्व सम्बन्धी अध्ययन को बढ़ावा मिला इन अध्ययनों के फलस्वरूप व्यक्तित्व मनोविज्ञान का क्षेत्र बहुत बढ़ गया है।

व्यक्तित्व को विकसित करने और दिशा देने में कुछ तत्वों का विशेष योगदान है, जिन्हें हम व्यक्तित्व के निर्धारक तत्व कहते हैं। व्यक्तित्व विकास पर संस्कृति की भी अहम् भूमिका होती है। संस्कृति का व्यक्तित्व पर प्रभाव जन्म से ही पड़ता है और यह प्रभाव जीवन पर्यन्त चलता रहता है। संस्कृति में परिवर्तन बहुत कम होते हैं। इसकी प्रकृति अपेक्षाकृत स्थाई होती है।

व्यक्तित्व की दृष्टि से व्यक्ति तीन प्रकार के हो सकते हैं :-

1- विख्यात

2- सामान्य

3- कुख्यात ।

जिनके विशेष शीलगुण राष्ट्र पर या विश्व स्तर पर विकसित हो जाते हैं वह व्यक्तित्व राष्ट्र स्तर पर या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महान व्यक्तित्व का धनी बन जाता है। जैसे महात्मा गांधी, आचार्य श्री महाप्रभु जिनके बाहरी या आन्तरिक गुण सामान्य स्तर के होते हैं।

निष्कर्ष : -

प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन अनेक प्रकार की स्थितियों-परिस्थितियों के सम्पर्क में आता है। वे परिस्थितियाँ कुछ सरल होती हैं तो कुछ जटिल भी होती हैं। उन परिस्थितियों के साथ व्यक्ति अपने गुणों के आधार पर अपना तालमेल या समायोजन बिठाने में सफल हो जाता है। इस समायोजन की प्रक्रिया में जो सफल होता है प्रायः उस व्यक्ति को समायोजित व्यक्तित्व कहते हैं। दूसरी ओर जो व्यक्ति समायोजन करने में सफल होता है उसे कुसमायोजित व्यक्तित्व कहते हैं। व्यक्तित्व का विघटन भी प्रायः एक जैसा नहीं होता है। अधिकतर यह व्यक्ति के किसी एक क्षेत्र विशेष में होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1- डॉ. सीताराम जायसवाल, व्यक्तित्व सिद्धान्त, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना, www 1981, प्रथम संस्करण

2- डॉ. डी.एन. श्रीवास्तव, व्यक्तित्व का मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1999 www

3- https://ncert.nic.in, आत्म एवं व्यक्तित्व

4- व्यक्तित्व सिद्धान्त के निर्धारक तत्व, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

भारत की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत की ज्ञान परंपरा

डॉ. परवीन वर्मा

'हिंदी विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय,
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

खेमराज आर्य

इतिहास विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय,
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

सारांश :-

भारत में अथाह महासागर की तरह ही ज्ञान परंपरा में समृद्धि, संपन्नता, वैभवशालीता, मौलिकता, आध्यात्मिकता, विभिन्नता में एकता, सहिष्णुता, समन्वय, अहिंसा, सत्य, नैतिकता, धार्मिक-सामाजिक व साम्प्रदायिक सदभावना, आपसी सह्योग, परोपकारिता, सहनशीलता, संवेदनशीलता आदि की विशालता दिखाई देती है। भारत सनातन काल से ही ज्ञान परंपरा के क्षेत्र में विश्व का अग्रणी देश रहा है। इसकी ज्ञान परंपरा से ही विश्व ने समता, स्वतंत्रता, बंधुता, सत्यनिष्ठता, कर्तव्यपरायणता, मानवता आदि से ही प्रेरणा प्राप्त की है।

ज्ञान परंपरा से आशय उस अमूल्य, अमूर्त धरोहर से होता है, जो कि अपनी मौलिकता को हर संकट, विपत्ति और विपरीत परिस्थितियों में भी अक्षुण बनाये रखती है चाहे उस पर कितना भी प्रहार किया गया हो। और वो अपनी प्राचीनता और मौलिकता के गुण के आधार पर समय के साथ ताल से ताल मिलाकर चलती रहती है व विकास की गाथा को सुरक्षित भी रखती है।

भारत की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत अविस्मरणिय है, जिस पर शायद ही कोई ऐसा भारतीय नागरिक हो जो गर्व न करता हो। यदि साहित्य की बात शुरू करे तो ऋग्वेद से लेकर आज तक के ग्रंथ ज्ञान के भण्डार से कम नहीं है। चार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, पुराण, महाकाव्यों के साथ साथ ही बौद्ध व जैन साहित्य भी ज्ञान के अमूल्य कोश है।

सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र में गीत, लोकगीत, संगीत, नृत्यकला, नाट्यकला, स्थापत्यकला, चित्रकला, लोककला, बर्तन, आभूषण, वस्त्र, पाककला, काष्ठ कला, मिट्टी शिल्प आदि का विकास मानव समाज की उत्पत्ति से लेकर आज तक भी विकसित होने के साथ अपने रीति-रिवाज, संस्कार को अक्षुण रखें हुए है।

साहित्यिक विरासत :-

साहित्य में सर्वप्रथम आता है धार्मिक साहित्य, जिसमें सबसे पहले सनातन या ब्राह्मण साहित्य के रूप में वेदों की रचना की गई। वेद चार है, भारत ही नहीं वरन् विश्व के साहित्य में ज्ञात लिखित प्रथम पुस्तक ऋग्वेद है। इससे तत्कालीन भारतीय समाज की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परंपराओं की जानकारी प्राप्त होती है। इसके पश्चात अन्य वेद सामवेद, यजुर्वेद और सबसे अंत में अथर्ववेद की रचना की गई। वेद भारतीय ज्ञान परंपरा के अग्रणी ग्रंथ है, जिनसे मानव के सर्वांगीण विकास के मार्ग को आध्यात्मिक रूप से प्राप्त करने की बात कही गई है।

इनके पश्चात सात ब्राह्मण सात आरण्यक, 108 उपनिषद दो महाकाव्य - 'वाल्मीकि' रचित रामायण व 'महर्षि वेदव्यास' रचित महाभारत, अठारह पुराण स्मृति ग्रंथ आदि ग्रंथों की रचना संस्कृत में की गई। इस साहित्य से भारतीय समाज की आधारशिला रही वर्णव्यवस्था, 16 सोलह संस्कार, 4 पुरुषार्थ व 8 विवाह पद्धतियाँ की विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है। जो आज भी अपने अस्तित्व के साथ अडिग खड़े हुए है।

ब्राह्मण साहित्य के समान ही पाली भाषा में बौद्ध धार्मिक साहित्य व प्राकृत भाषा में जैन साहित्य लिखा गया। बौद्ध साहित्य में सर्वप्रथम त्रिपिटकों त्विनयपिटक, सुत्तपिटक त्अभिधम्मपिटक में बौद्ध दर्शन, नियम, बौद्ध के विचार, 550 जातक कथाएँ जिनमें की महात्मा बुद्ध के पूर्वजन्मों की कहानियाँ मिलती है। व ललितविस्तर, महावस्तु, दीपवंश, महावंश, मिलिन्दपन्हों आदि भी बौद्ध साहित्य है जिनसे तत्कालीन समय के समाज की जानकारी प्राप्त होती है। बौद्ध साहित्य के बाद प्राकृत भाषा में रचित जैन साहित्य आता है। इस साहित्य में 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्णक, 6 छेदसूत्र, 5 मूलसूत्रों के साथ ही अन्य जैन ग्रंथों से भी तत्कालीन समय के समाज की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। यदि ऐतिहासिक साहित्य की बात बात की जाये तो ये साहित्य राजा-महाराजाओं की वीरता-धीरता, वैभवता, सांस्कृतिक विरासत के निर्माण में उनके योगदान की भी गाथा कहता हुआ दृष्टिगोचर होता है। चाहे चाणक्य कृत अर्थशास्त्र, पाणिनि कृत अष्टाध्यायी, आर्यभट्ट कृत आर्यभट्टियम, चरक कृत चरक संहिता, बाणभट्ट कृत हर्षचरित, कादम्बरी, कल्हण कृत राजतरंगिणी आदि उस समय के प्रसिद्ध महा-मनीषियों के ज्ञान की खान से कम नहीं है। इन ग्रंथों से भी तत्कालीन समय के समाज की जानकारी प्राप्त होती है। इस साहित्यिक विकास के साथ ही सुदूर दक्षिण भारत में भी संगम साहित्य से दक्षिण भारत की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक व सांस्कृतिक विरासत के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। प्रमुख ग्रंथ है तोल्लकाप्पियर रचित त्तोल्काप्पियमत्र, इलंगोआदिगल रचित शिल्पादिकारम्,

सांस्कृतिक विरासत :-

भारत की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विरासत एक ऐसी ज्ञान परंपरा का वाहक रही है, जो अनेक विपत्तियों के बाद भी वर्तमान में भी अपनी मौलिकता, यथार्थता के साथ दृढ़ता से खड़ी हुई है। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा आज भी अपनी संस्कृति को बचाये हुए है और इसके दर्शन आम-जनमानस में हम वर्तमान में भी पाते हैं। सास्कृतिक विरासत के क्षेत्र में सर्वप्रथम हम स्थापत्यकला के बारे में बात करेंगे। भारतीय स्थापत्यकला पूर्णता विकसित व

परिपक्वता पर पहुँच चुकी है। भारत में स्थापत्यकला के प्रमाण यत्र तत्र बिखरे पड़े हैं। साँची, सारनाथ, बौधगया, भरहुत, कार्ले आदि स्थानों पर बौद्ध धर्म से संबंधित स्तूप, स्तंभ, गुफाएं, बौद्ध विहार, जैन मंदिर, मठ-मंदिर, किले, गढ़ियाँ, बावड़ियाँ, गुफाओं के चित्र (बाघ, अजंता, एलोरा आदि) आदि इसके प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

अभिलेखों ने भी भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रचारित व प्रसारित किया है। जैसे कलिंग राजा - खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, रूद्रदामन् का जूनागढ़ अभिलेख, गौतमी बलश्री का नासिक अभिलेख, समुन्द्रगुप्त का इलाहबाद अभिलेख (प्रयाग प्रशस्ति), चालुक्य शासक पुलकेशिन् द्वितीय का ऐहोल अभिलेख, मालवा नरेश यशोवर्मन् का मंदसौर अभिलेख, प्रतिहार राजा भोज का ग्वालियर अभिलेख, गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का मैहरोली स्तंभ अभिलेख आदि से तत्कालीन समय की जानकारी के साथ ही उस समय की जानकारी प्राप्त होती है।

महान ऋषियों की भी भारत में एक लंबी परंपरा रही है, जिनके उपदेशों व शिक्षाओं ने तत्कालीन समय से लेकर वर्तमान तक भी हमेशा भारतीय जनमानस को एक रास्ता दिखाने का कार्य करते रहे। यथा- वशिष्ठ, विश्वामित्र, वाल्मीकि, वेदव्यास, चाणक्य, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, पूरण कश्यप, चार्वाक, मक्खलि पुत्र गौशाल आदि। विज्ञान व गणित के क्षेत्र में भी भारत हमेशा से ही विश्व के देशों में अग्रणी रहा है। चाहे खगोल शास्त्र हो, चिकित्सा विज्ञान हो, रसायन शास्त्र हो, गणित हो हर क्षेत्र में भारत ने अनेक उपलब्धियां प्राप्त की है। वराहमिहिर, आर्यभट, भास्कराचार्य, चरक, सुश्रुत आदि ने इन क्षेत्रों में विशेष ख्याति प्राप्त की।

इसके साथ ही 16 संस्कार, 4 पुरुषार्थ, 8 विवाह पद्धति संस्कार, सत्य, अहिंसा, करूणा, परोपकार, उदारता, मानवता, समन्वय, सहयोग, क्षमा, दान, उपवास, तीज-त्यौहार आदि के विचारों ने भी भारतीय संस्कृति को सुरक्षित बनाये रखा है। चित्रकला, मूर्तिकला, संगीत कला, नृत्य कला, काष्ठ कला, मिट्टी कला, सिक्के निर्माण कला, धातुकला आदि क्षेत्रों में भी भारत की एक अलग ही सांस्कृतिक पहचान थी, जोकि वर्तमान तक भी दिखाई देती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. सिंघानिया, नितिन, भारतीय कला एवं संस्कृति, MCGrawHilleducation, Chennai.
2. पट्टनायक, देवदत्त, भारतीय संस्कृति, कला एवं विरासत, पियर्सन इण्डिया एजुकेशन सर्विस प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा.
3. कुमार, डॉ. संजय, इतिहास, ज्ञान वितान प्रकाशन, जयपुर.
4. पाण्डे, एस. के., प्राचीन भारत, प्रयाग एकेडमी पब्लिकेशन एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, इलाहाबाद. 5. श्रीवास्तव, के.सी., प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति, यूनाईटेड बुक डिपो, इलाहाबाद.

भारतीय वाणिज्य में ज्ञान परंपरा की ऐतिहासिक और आधुनिक भूमिका

प्रो. प्रकाश कुमार अहिरवार
वाणिज्य विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय,
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

डॉ. एस. डी. राठौर
'वाणिज्य विभाग,
पीएमसीओई शासकीय पीजी महाविधालय
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

शोध सारांश : -

भारत ने संस्कृति और ज्ञान के क्षेत्र में अनमोल योगदान दिया है। लगभग 5000 साल पहले, जब दुनिया की कई सभ्यताएँ केवल खानाबदोश थीं, भारत में सिंधु घाटी सभ्यता की हड़प्पा संस्कृति विकसित हो चुकी थी। यह विश्व का पहला विश्वविद्यालय, तक्षशिला, 700 ईसा पूर्व में स्थापित हुआ, जहां 10500 से अधिक छात्रों ने 60 से अधिक विषयों का अध्ययन किया। चौथी शताब्दी ईसा पूर्व में निर्मित नालंदा विश्वविद्यालय प्राचीन भारत की शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। भारतीय ज्ञान परंपरा को अब कई प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में एक विशिष्ट विषय के रूप में शामिल किया गया है, और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इसे विशेष महत्व दिया गया है।

इस संदर्भ में, भारतीय व्यापार प्रणाली का भी अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण है। वैश्विक स्तर पर, लोग भारतीय सांस्कृतिक परिवेश और प्राचीन व्यापारिक प्रणाली के प्रति गहरी उत्सुकता दिखा रहे हैं। भारतीय व्यापार प्रणाली की औपचारिक और अनौपचारिक पद्धतियाँ इसकी विविधता को दर्शाती हैं। विभिन्न राज्यों में लेखा पद्धतियों और वित्तीय नववर्षों में भिन्नताएँ भौगोलिक परिस्थितियों पर निर्भर हैं, और जाति व्यवस्था का भी आर्थिक गतिविधियों पर प्रभाव पड़ा है।

प्राचीन काल से भारतीय व्यापार में सतत विकास और सामाजिक जिम्मेदारी की अवधारणाएँ मौजूद रही हैं। भारतीय व्यापार प्रणाली में बहुमूल्य धातुओं में निवेश, दान, विदेशों में काम कर रहे भारतीयों द्वारा परिवारों को भेजे जाने वाले धन, और सतत विकास की अवधारणाएँ महत्वपूर्ण हैं। इन विशेषताओं का अध्ययन और शोध करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि भारत आज विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारतीय व्यापार प्रणाली की गहरी समझ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संभावनाओं को बढ़ा सकती है और निवेशकों तथा व्यापारियों के लिए सहायक सिद्ध हो सकती है। इसके अतिरिक्त, भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से युवाओं के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे और वैश्विक स्तर पर वाणिज्य में अधिकतम सफलता प्राप्त की जा सकेगी।

कीवर्डस : -

भारतीय ज्ञान परंपरा, वाणिज्य, प्राचीन व्यापार, आर्थिक नीतियाँ, वैश्विक व्यापार

प्रस्तावना : -

भारत की प्राचीन सभ्यता ने दुनिया को न केवल सांस्कृतिक और ज्ञान की धरोहर दी है, बल्कि व्यापार और वाणिज्य की समृद्ध परंपराओं में भी अमूल्य योगदान प्रदान किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा, विशेष रूप से वाणिज्य के क्षेत्र में, हजारों वर्षों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक यात्रा से जुड़ी हुई है, जिसने भारतीय समाज की आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं को गहराई से प्रभावित किया है। इस परंपरा ने व्यापारिक गतिविधियों को दिशा और नियमन प्रदान किया, साथ ही समाज के नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों को भी सहेजा और प्रोत्साहित किया।

प्राचीन भारत में वाणिज्य केवल आर्थिक लाभ का साधन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिकता की अवधारणाओं से भी जुड़ा था। व्यापारिक व्यवहार को एक व्यवस्थित रूप देने के साथ-साथ, भारतीय वाणिज्य ने पारदर्शिता, नैतिकता और समाज के प्रति जिम्मेदारी को महत्वपूर्ण माना। वेद, धर्मशास्त्र, और अर्थशास्त्र जैसे शास्त्रों में वाणिज्य की विभिन्न परंपराएँ समाहित हैं, जिनमें वेदों में व्यापारिक आदर्श, मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति में नैतिकता और नियम, और कौटिल्य का अर्थशास्त्र में व्यापारिक नीतियों की विस्तृत चर्चा शामिल है।

आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में, जहां वैश्वीकरण और डिजिटल परिवर्तन प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं, प्राचीन भारतीय वाणिज्य की परंपराएँ और सिद्धांत भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा में वाणिज्य की संरचनाओं, सिद्धांतों और प्रक्रियाओं का गहराई से विश्लेषण करना है। यह अध्ययन यह दिखाएगा कि ये प्राचीन परंपराएँ आज के व्यापारिक परिदृश्य में कैसे लागू की जा सकती हैं और वैश्विक वाणिज्य में भारतीय दृष्टिकोण को कैसे समाहित किया जा सकता है।

शोध उद्देश्य : -

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य के बीच के संबंधों की गहराई और उनकी पारस्परिक प्रभावशीलता को समझना। इस शोध का लक्ष्य यह है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान और वाणिज्यिक प्रथाएँ कैसे एक-दूसरे को प्रभावित करती रही हैं और कैसे ये ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण आज के वाणिज्यिक परिदृश्य को प्रभावित कर रहे हैं।

परिकल्पना : -

यह मान्यता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा ने वाणिज्यिक प्रथाओं को नैतिक, कानूनी, और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से निर्देशित किया। प्राचीन शास्त्रों और ग्रंथों में उल्लिखित व्यापारिक सिद्धांत और प्रथाएँ, जैसे कि मनुस्मृति और अर्थशास्त्र, ने व्यापारिक नैतिकता, लेन-देन की पारदर्शिता, और आर्थिक नीतियों की नींव रखी।

शोध विधि : -

इस शोध में ऐतिहासिक और साहित्यिक विश्लेषण विधियाँ अपनाई जाएंगी। प्राचीन ग्रंथों, शास्त्रों, और ऐतिहासिक दस्तावेजों का गहन अध्ययन किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, आधुनिक वाणिज्यिक प्रथाओं और नीतियों पर चर्चा के लिए केस स्टडीज़ और तुलनात्मक विश्लेषण किया जाएगा। डेटा संग्रह के लिए प्राथमिक स्रोतों (ग्रंथ, ऐतिहासिक दस्तावेज़) और द्वितीयक स्रोतों (शोध पत्र, समकालीन विश्लेषण) का उपयोग किया जाएगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा : -

भारत की ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों पुरानी है और यह न केवल धार्मिक और दार्शनिक चिंतन में, बल्कि वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में भी अत्यंत समृद्ध रही है। वेद, उपनिषद, पुराण, महाभारत, रामायण, और विभिन्न ग्रंथों में व्यापार, प्रबंधन और आर्थिक सिद्धांतों के बारे में गहरा ज्ञान प्रस्तुत किया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन हमें प्राचीन व्यापारिक विधियों, लेखा पद्धतियों, और प्रबंधन कौशल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

प्राचीन भारतीय समाज ने व्यापार को केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे समाज के विभिन्न वर्गों की सामाजिक और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को पूरा करने का एक महत्वपूर्ण साधन माना। व्यापार और वाणिज्य की प्राचीन भारतीय परंपराएँ, जैसे कि वस्त्र व्यापार, आभूषण निर्माण, और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मार्गों का निर्माण, भारत को एक महत्वपूर्ण वाणिज्यिक केंद्र बना दिया था। इसके अलावा, भारतीय व्यापारियों ने विभिन्न व्यापारिक संघों का निर्माण किया था जो उनके व्यवसायिक हितों की रक्षा करते थे और व्यापारिक मानक स्थापित करते थे।

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य : -

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य का सम्बन्ध गहरा और ऐतिहासिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा में व्यापार और वाणिज्य का विशेष स्थान रहा है, जिसे प्राचीन ग्रंथों और शास्त्रों में भी देखा जा सकता है। वेद, उपनिषद, और पुराणों में व्यापार की विधियों और आर्थिक नीतियों का वर्णन मिलता है। प्राचीन भारत में 'व्यापारशास्त्र' और 'नितिशास्त्र' जैसे ग्रंथों ने व्यापारिक गतिविधियों और नीतियों पर गहरी जानकारी प्रदान की। भारत के व्यापारी न केवल स्थलीय मार्गों पर व्यापार करते थे, बल्कि समुद्री मार्गों पर भी सक्रिय थे, जैसे कि 'सिल्क रोड' और 'स्पाइस रूट'। वाणिज्य की यह समृद्ध परंपरा भारतीय समाज के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है। भारतीय व्यापारियों ने सोने, चांदी, मसाले, वस्त्र, और अन्य वस्तुओं के व्यापार के माध्यम से वैश्विक बाजार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। इसके अलावा, भारतीय गणित और विज्ञान ने व्यापारिक गणनाओं को सटीक बनाने में महत्वपूर्ण योगदान किया, जिससे व्यापार और वाणिज्य में स्थिरता और वृद्धि हुई। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा ने वाणिज्य के क्षेत्र में न केवल एक समृद्ध विरासत छोड़ी है, बल्कि वैश्विक व्यापारिक नेटवर्क को भी आकार दिया है।

अध्ययन की आवश्यकता और महत्व : -

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य का अध्ययन न केवल भारतीय संस्कृति और आर्थिक इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह वर्तमान वाणिज्यिक प्रथाओं और नीतियों को भी प्रभावित करता है। इस अध्ययन की आवश्यकता और महत्व को कई दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है:

1. ऐतिहासिक संदर्भ

भारतीय ज्ञान परंपरा में वाणिज्य का अत्यधिक महत्व रहा है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे कि वेद, उपनिषद, और पुराणों में व्यापार और वाणिज्य की विधियों पर गहराई से चर्चा की गई है। ये ग्रंथ न केवल व्यापारिक प्रक्रियाओं और नियमों को स्पष्ट करते हैं, बल्कि यह भी दिखाते हैं कि व्यापार और वाणिज्य सामाजिक और आर्थिक जीवन का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। भारतीय व्यापारी न केवल स्थानीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी व्यापार करते थे, जैसे कि 'सिल्क रोड' और 'स्पाइस रूट' पर।

2. आधुनिक संदर्भ

आज के वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारतीय ज्ञान परपरा और वाणिज्य का अध्ययन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। भारतीय अर्थव्यवस्था की जड़ें प्राचीन व्यापारिक प्रथाओं और नीतियों में हैं। भारतीय वित्तीय प्रथाओं, व्यापारिक नैतिकता और निवेश के तरीकों को समझने से आधुनिक वाणिज्यिक निर्णयों में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, प्राचीन भारतीय ग्रंथों में व्यापारिक अनुशासन और ऋण प्रबंधन के सिद्धांत वर्णित हैं, जो आज भी आर्थिक स्थिरता और निवेश रणनीतियों में लागू हो सकते हैं।

3.सांस्कृतिक दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य का अध्ययन सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन भारतीय व्यापारिक संस्कृति और परंपराओं को समझने में मदद करता है। भारतीय व्यापारियों की सच्चाई, ईमानदारी और पारदर्शिता की परंपराएँ आज भी वाणिज्यिक प्रथाओं में देखी जाती हैं। भारतीय व्यापारी समुदाय की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर को समझने से वैश्विक व्यापारिक सहयोग और सांस्कृतिक आदान- प्रदान को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

4. शिक्षा और अनुसंधान

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य का अध्ययन शिक्षा और अनुसंधान के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन छात्रों और शोधकर्ताओं को प्राचीन वाणिज्यिक विधियों और नीतियों के अध्ययन के लिए प्रेरित करता है, जिससे नई नीतियों और प्रथाओं का निर्माण संभव हो सके। इसके अतिरिक्त, यह अध्ययन भारतीय और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक संबंधों को बेहतर ढंग से समझने में सहायक होता है।

5. आर्थिक विकास

भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन आर्थिक विकास के लिए भी अनिवार्य है। प्राचीन व्यापारिक ग्रंथों से प्राप्त ज्ञान को आधुनिक वाणिज्यिक प्रथाओं में लागू करने से आर्थिक नीतियों और प्रबंधन में सुधार हो सकता है। यह भारतीय व्यापारिक नीतियों को वैश्विक मानकों के अनुसार ढालने में भी मदद करता है।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य का अध्ययन एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत को समझने, सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रोत्साहित करने, और आधुनिक वाणिज्यिक प्रथाओं को बेहतर बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है। यह अध्ययन न केवल अतीत की समझ प्रदान करता है, बल्कि भविष्य की आर्थिक रणनीतियों और नीतियों को भी प्रभावित करता है।

निष्कर्ष : -

भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य पर शोध पत्र का निष्कर्ष इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य का गहरा और जटिल संबंध रहा है, जो प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक प्रभावशाली रहा है। प्राचीन भारत में, वेद, उपनिषद, और शास्त्रों ने व्यापार, वाणिज्य और आर्थिक नीतियों की नींव रखी। 'यज्ञ' और 'धर्म' के संदर्भ में वाणिज्यिक गतिविधियाँ आर्थिक और सामाजिक दायित्वों के हिस्से के रूप में मान्य थीं।

संस्कृत ग्रंथों जैसे कि मनुस्मृति और अर्थशास्त्र ने व्यापार के नैतिक और कानूनी पहलुओं को स्पष्ट किया, जिससे एक सुव्यवस्थित वाणिज्यिक प्रणाली का निर्माण हुआ। इन ग्रंथों ने व्यापारिक लेन-देन, कराधान, और व्यापारिक आचार-व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए सिद्धांत प्रदान किए। मध्यकालीन भारत में, व्यापारिक गतिविधियाँ और आर्थिक नीतियाँ स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उन्नति की ओर अग्रसर हुई। भारतीय व्यापारिक नेटवर्क ने विविध वस्त्र, मसाले, और वस्तुएं विभिन्न देशों तक पहुँचाई, जो भारतीय वाणिज्य की वैश्विक स्थिति को सुदृढ़ करता है।

आज के संदर्भ में, भारतीय ज्ञान परंपरा वाणिज्य की आधुनिक व्यवस्थाओं को समझने और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह प्राचीन ज्ञान और आधुनिक वाणिज्यिक प्रथाओं का संगम भारतीय अर्थव्यवस्था की विकासशील दिशा को मार्गदर्शन प्रदान करता है। इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य और मौजूदा प्रासंगिकता व्यवसायिक नीति और आर्थिक रणनीतियों के विकास में एक अमूल्य योगदान करता है।

संदर्भ सूची -

1. सारस्वत, डॉ. भानु. (2008). भारतीय वाणिज्य: एक ऐतिहासिक दृष्टिकोण. नई दिल्ली: प्राचीन भारत अध्ययन संस्थान.
2. खान, प्रोफेसर मोहम्मद. (2011). भारतीय व्यापार और वाणिज्य की परंपराएँ. जयपुर: भारतीय आर्थिक ग्रंथालय.
3. सिंह, डॉ. अमरजीत. (2015). प्राचीन भारतीय व्यापार: सिद्धांत और अभ्यास. वाराणसी: ज्ञानवर्धन पब्लिकेशन.
4. राय, डॉ. अजय. (2017). वेदों में व्यापार और वाणिज्य: एक विश्लेषण. पटना: प्राचीन संस्कृति अनुसंधान संस्थान.
5. शर्मा, डॉ. गीता. (2019). भार भारतीय वाणिज्य: ऐतिहासिक और आधुनिक दृष्टिकोण. दिल्ली: समकालीन अनुसंधान प्राधिकरण.
6. मिश्रा, डॉ. संजय. (2020). भारतीय ज्ञान परंपरा और आर्थिक नीतियाँ. कोलकाता: अर्थशास्त्र केंद्र.
7. सिंगला, डॉ. रवींद्र. (2021). प्राचीन भारतीय वाणिज्य की सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम. मुंबई: सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान.
8. भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा की भूमिका पर शोध. (2022). सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भ. अहमदाबाद: भारतीय ज्ञान पत्रिका.
9. मुखर्जी, डॉ. रंजन. (2023). वैश्विक अर्थव्यवस्था और भारतीय व्यापार परंपराएँ. भोपाल: आधुनिक अर्थशास्त्र केंद्र.
10. पटनायक, डॉ. सुमिता. (2024). वाणिज्य और आर्थिक प्रबंधन में भारतीय प्राचीन ग्रंथों का प्रभाव. हैदराबाद: भारतीय प्रबंधन संस्थान.
11. चंद्रकांत शर्मा, भारतीय अर्थशास्त्र और वाणिज्य (2020).
12. अरविंद शर्मा, प्राचीन भारत में व्यापार और वाणिज्य (2018).
13. देवेंद्र सिंह, आधुनिक वाणिज्य और भारतीय ज्ञान परंपरा (2022).
14. ए. के. सिंह, भारतीय वाणिज्यिक इतिहास (2019).
15. नीना शर्मा, वाणिज्यिक नीतियाँ और भारतीय परंपरा (2021).
16. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
17. वेद
18. उपनिषद
19. मनुस्मृति
20. याज्ञवल्क्य स्मृति
21. कौटिल्य का अर्थशास्त्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा

डॉ. संगीता शाक्य

समाज शास्त्र विभाग
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

शोध सार : -

भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत का मूल आधार ही भारतीय परंपरा है। भारतीय ज्ञान परंपरा भारतवर्ष में प्राचीनकाल से चली आ रही शिक्षा प्रणाली है, इसके अंतर्गत वेद, वेदांग, उपनिषद, श्रुतिस्मृति से लेकरविभिन्न प्रकार के दर्शनशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र शिक्षाशास्त्र, नाट्यशास्त्र, प्रबंधन एवं विज्ञान, विद्याशाखा इत्यादि के अथाह ज्ञान के भंडार हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत शिक्षा को विद्या, ज्ञान, दर्शन, प्रबोध, प्रज्ञा एवं भारतीइत्यादि शब्दों से परिभाषित किया गया है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के स्वर्णिम इतिहास का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि, प्राचीन समय में इस परंपरा का अभीष्ट उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करते हुए विद्यार्थी के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाजउपयोगी एवंमोक्षगामी बनाना था।

भारतीय ज्ञान परंपरा प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें, ज्ञान एवं विज्ञानलौकिक एवं पर-लौकिक कर्म एवं धर्म तथा भोग व त्याग का अद्भुत समन्वय रहा है। इस प्रकार प्राचीन समय से ही शिक्षा के प्रति भारतीय ज्ञान परंपरा का दृष्टिकोण अत्यंत व्यापक एवं गहन रहा है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन-अध्यापन में विशेष बल दिया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों के समृद्ध आलोक में निर्मित की गई है। इसके आधार स्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को भी केंद्रीय स्तंभ माना गया है। इस दिशा में नई पीढ़ी को भारतीय ज्ञान परंपरा से जोड़ने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अभिनव पहल की है। इसके अंतर्गत प्रत्येक विषय की पाठ्यचर्या में भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित ऐसेसंप्रत्ययों को जोड़ा जा रहा है जिनके अध्ययन द्वारा, निश्चित रूप से ही नई पीढ़ी के विद्यार्थियों में भारतीय होने का गौरवबोध जागृत होगा।

उद्देश्य : -

स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद भी हम अपने दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक ज्ञान, समाजिक घनिष्ठता तथा समन्वय से दूर है। भारत उदय हेतु हमें अपने ज्ञान को जानना, समझना एवं फैलाना परम आवश्यक है। आदिकाल से ही भारत देश अपने धर्मग्रंथों, संस्कृति एवं बहुभाषीय गुण के लिए प्रसिद्ध रहा है, यह तीनों गुण केवल शब्द मात्र नहीं अपितु प्रत्येक भारतीय के भाव है जो, उसे अपने देश की संस्कृति से विरासत में मिले हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप व्यावहारिक एवं दैनिक जीवन को सुचारू रूप से संचालित करने में सहायक रहा है। इससे यह ज्ञातत्व होता है कि, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 केवल भारत के गौरवशाली इतिहास को ही हमारी शिक्षा का अंग नहीं बना रही है बल्कि, भूतकाल में जन्में सभी महान व्यक्तित्व जैसे चरक, रामानुजन, सुश्रुत आर्यभट्ट, बुद्ध, रविदास, वाल्मीकि, बिस्मिल्लाह, महात्मा गांधी, भगतसिंह, गार्गी, आपला, घोषा, सावित्री, रमाबाई, चांदबीबी रजियासुल्तान, मदरटेरेसा, एनी बेसेंट आदि के विचारों एवं कार्यों को वर्तमान की प्रासंगिकता के अनुरूप शिक्षा के सभी स्तरों में शामिल करने का प्रयास कर रही है। जिससे एकस्वस्थ भारतवर्ष एवं संस्कृति को पुनःस्तंभित किया जा सके।

यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती है कि, बालक अपने ज्ञान, व्यवहार बौद्धिक कौशल से स्थाई विकास, समृद्ध जीवन यापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके, तथा उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सके। इस कल्पना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए सनातन ज्ञान परंपरा तथा विचार एवं मूल्यों को ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा ना कि, एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान किया जाए। इस लेख का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है।

प्रस्तावना : -

भारतीय लोग आज भी अपनीपरंपरा और मूल्योंको बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगोंके बीच की घनिष्ठता ने भारत देश बनाया है। जिसमें मानव जीवन के लिए, भाव, राग और ताल समाहित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि, भारतीय संस्कृति, वेद, तंत्र एवं योग की त्रिवेणी है। विगत दिनों में प्रख्यात चिंतक जे. नंदकुमार जी ने एक कार्यकर्म में, प्राध्यापकों को बताया था कि, हजारों साल पहलेवेदों की रचना हुई, ऐसे सैकड़ो उदाहरण ऋगवेद में देखने को मिलते हैं। ऋग्वेद की शुरुआती ऋचाओं में कहा जाता है कि, आ नो भद्राःयंतु विश्वतः अर्थात 'सात्विक साधु विचार हर दिशा से आने दो। स्वयं को किसी चीज से वंचित न करो। अच्छी बातों को ग्रहण करो, तभी भला होगा।' प्राचीन काल से ही हमारा देश उच्च मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है भारत की संस्कृति रही है कि, भारत ने दुनिया को अलग-अलग देश के रूप में माना ही नहीं है।

"अयम निजः परोवेतिगणना लघु चेतसाम। उदारचरितनाम तु वसुधैव कुटुंबकम्"

महाउपनिषद के इस सिद्धांत के आधार पर भारत दुनिया को एक परिवार मानता है, यह अलग बात है कि पाश्चात्य सभ्यता की आपाधापी मेंहम भी यह गलती से समझने लगे कि, यह सभ्यता भौतिकवाद पर टिकी है, ना की ज्ञान और अध्यात्म पर। इस सदी के उत्तरार्धसे पश्चिमी सभ्यता वाले देश भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाने और जाननेपर जोर देने लगे है। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और यहां की जीवन शैली को जानने के लिए अपने

यहां कई विभाग से लेकर शोध संस्थानों की स्थापना करने लगे हैं। भारत की परंपराओं को आज विश्व भी अपना रहा है, हमें और हमारी भावी पीढ़ियों को भी भारत के प्राचीन मूल्य को यथोचित महत्व देना होगा। इसके लिए आंतरिक ज्ञान, गुण, शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगा।

भारतीय ज्ञान परंपरा : -

भारतीय ज्ञान विज्ञान की यह सनातन परंपरा अनादि काल से ही है, चाहे तक्षशिला हो, नालंदा हो, या विक्रमशिला सभी विश्वविद्यालयों के ज्ञान केंद्र में परंपरा जुड़ी रही है। अतः वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा उच्च स्तरीय रही है, हम सबस्कूल के दिनों से ही पाइथागोरस प्रमेय से परिचित होते रहे हैं, लेकिन यह जानना दिलचस्प होगा कि पाइथागोरस से कई सौ साल पहले भारत में इसका प्रयोग किया जाने लगा था। पाइथागोरस जिस गणित को दुनिया के सामने लेकर आए उससे कई सौ साल पहलेबौधायनने शुल्व सूत्र में इसकी विस्तार से चर्चा कर दी थी आज भी भारत का हर राजमिस्त्री लंबे धागे के साथ वजन लगाए रखता है, और भवन निर्माण में उसका तरह तरह से बखूबी इस्तेमाल करता है वहशुल्व सूत्र की ही उपज है। इसी उपकरण की मदद से वैदिक काल में लोग विभिन्न आकार वाली यज्ञ वेदी की रचना करते थे। किसी यज्ञ के लिए किस क्षेत्रफल और आकार प्रकार की यज्ञवेदी बनाई जावेगी। समाज की इसआवश्यकता को पूरा करने के लिए गणित का उपयोग किया गया और रेखागणित (ज्योमेट्री) उत्पन्न हुई। दिल्ली विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रोफेसर दिनेश सिंह बताते हैं कि, भारतीय ज्ञान विज्ञान की परंपरा में केवल बोधायन ही नहीं रहे हैं बल्कि कात्यायन भी हुए हैं, ऐसे तमाम गणितज्ञ भारत में हुए हैं जिन्होंने सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर गणित की रचना की कुल 16 शुल्व - सूत्र लिखे गए निश्चित रूप से पाइथागोरस का प्रमेय गणित का ऊंचा सिद्धांत है। वर्तमान समय में भी शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण को विकसित करने की जरूरत है। शिक्षा में भारतीय पुरातन ज्ञान परंपराव संस्कृतिके समावेश के नजरिए से यह संगम मात्र विकल्प नहीं है बल्कि, इस दिशा में सच्चा प्रयास है।

भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा कला, संस्कृति, दर्शन, समाजशास्त्र, विज्ञान व प्रबंधन समेत विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करती है। हमें इस दृष्टिकोण को शिक्षा के क्षेत्र में अपनाकर राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया को और मजबूत बनाना होगा। मौजूदा शिक्षण पद्धति में पश्चिम पक्षीय झुकाव ज्यादा है, ऐसे में शिक्षण पद्धति में भारतीय दृष्टिकोण के विकास के लिए, गैरसरकारी व स्वायत्त प्रयासों को बढ़ावा देना, बदलते वैश्विक परिवेश में समय की जरूरत बन चुका है।

मैंसमझती हूं कि, भारत के ऊपर जैसे-जैसे पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ता गया, वैसे-वैसे इसकी सनातनी ज्ञान विज्ञानपरंपरा छिन्न-भिन्न होती रही है। हालांकि नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों के पतन के बाद से ही इसकी शुरुआत हो गई थी और विद्या का स्तर नीचे आने लगा था। इसका मतलब यह नहीं है कि हम, वर्तमान विश्वविद्यालयीन शिक्षा परंपरा को पूरी तरह खारिज कर दें। क्योंकि विकल्पहीनता के दौर में इन विश्वविद्यालयों ने एक विकल्प दिया था। इन्हीं शिक्षा संस्थानों से कई प्रतिभाएं निकली हैं, लेकिन आजादी के बाद हम जिस रास्ते पर चले, उससे भारतीय ज्ञान परंपरा का अधिक नुकसान हुआ है। आज भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने की ही नहीं बल्कि, इस ज्ञान के व्यापक भंडार को खोजने की जरूरत है। प्राचीन ग्रंथो में छुपे हुए इस ज्ञान विज्ञान के खजाने को खोज कर उसे सावरकर मानव कल्याण के लिए इस्तेमाल में लाने की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सनातन ज्ञान परंपरा की उपयोगिता : -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत के सनातन ज्ञान एवं विचारों से समृद्ध परंपरासे प्रेरित होकर निर्मित की गई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रमुखस्तंभों में भारतीय ज्ञान परंपरा को भी एक महत्वपूर्ण स्तंभ माना गया है। जहां शिक्षा की प्राथमिक इकाई (पूर्व प्राथमिक शिक्षा) से लेकर, शिक्षा की अंतिम इकाई (प्रौण शिक्षा) तक भारतीय ज्ञान को स्थापित करने का प्रयास किया गया है। यह शिक्षा नीति ऐसी कल्पना करती है कि, शिक्षार्थी अपने ज्ञान व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थाई विकास, समृद्धजीवन यापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके। तभी उसे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता है। इस कल्पना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए सनातन ज्ञान परंपरा, प्रथा, विचार एवं मूल्यों को नवचरित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा ना कि, एक अलग विषय के रूप में स्थापित करके ज्ञान प्रदान किया जाए तभी बालक का विकास सनातनी ज्ञान अनुरूप संभव है।

एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था जिसमें कोई भी शिक्षार्थी सामाजिक, आर्थिक, बौद्धिक एवं अन्य भेदभाव के कारण पीछे नहीं रहेगा। इसके लिए सर्व शिक्षा अभियान को समग्र शिक्षा के रूप में परिभाषित करते हुए वर्ष 2030 तक सभी बच्चों का प्राथमिक स्कूलों में 100% नामांकन करने का लक्ष्य रखा गया है। जो भारत को नई विकास की दिशा देने में सहायक होंगे । (NEP 2020) भाषा रूपी असंगतता को समाप्त करते हुए इस शिक्षा नीति ने, सभी बच्चों की प्राथमिक स्तर की शिक्षा को अपनी मातृभाषा (हिंदी) या स्थानीय भाषा (गैर हिंदीप्रदेश हेतु) में प्रदान करने की बात कही है। जिससे की, बालक को अपनीमूलभूत आवश्यकताओं एवं मूल्यों को जानने एवं समझने में आसानी होगी। इसके द्वारा बालक अपनी अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकेगा। सामाजिक विज्ञान में समाहित लक्ष्य एवं विषय (इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति, भूगोल आदि) भारतीय ज्ञान परंपरा स्थापत्य कला एवं परंपरा आदि के बारे में सीखने-सिखाने का सुअवसर प्रदान करती है। इसी प्रकार भाषागत साहित्य एवं अन्य विषयों के पाठ्यक्रम में स्थानीय ज्ञान एवं सनातन ज्ञान की उपलब्धता बालक को अपने देश के विषय में जानने में मदद करेगी।

अतएव जहां कहीं भी संभव हो सके कला, संगीत, भाषा, साहित्य, नाट्यकला आदि सभी विषयों में भी इसे वैज्ञानिक रूप से स्थापित करने का प्रयास करना होगा। वहीं इसके अन्य पक्ष पर ध्यान दिया जाए तो हमें, पाठ्यक्रम निर्माण एवं शिक्षाण के समय भी यह ध्यान रखने की आवश्यकता होगी कि, भारतीय ज्ञान किसी सूचना या महत्वपूर्ण बिंदु को (किसी कोष्ठक या बॉक्स में बंद) के रूप में ना प्रस्तुत करके किसी प्रकार की कहानी या विस्तार रूप में व्याख्यान विवरण दिया जाना चाहिए। तभी बालकों को उसके प्रति रुचि में वृद्धि होगी। उदाहरण के लिए अगर शिक्षकलोकतंत्र के बारे में कक्षा में शिक्षण प्रदान कर रहा है तो उसे, लोकतंत्र से पूर्व भारत के प्रारंभ में प्रचलित राज व्यवस्था एवं अन्य व्यवस्था या किसी उपलब्धि से छात्रों को अवगत कराया जाना चाहिए। जिससे वह नवीन ज्ञान के साथ प्राचीन ज्ञान को भी आत्मसात कर सके। इसे सतत रूप में प्रवाहमान बनाए रखने हेतु अभिनय, प्रतियोगिता,

भाषण, वाद-विवाद, भ्रमण आदि तरीकों को भी अपनाया जाना चाहिए। इससे बच्चों में भारतीय इतिहास परंपरा तथा साहित्य के प्रति जागरूकता एवं विवधता का सृजन होगा

निष्कर्ष : -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा व्यवस्था में स्थान दिए जाने से हमें भारतीय ज्ञान परंपरा को विकसित करने का सुअवसर मिला है। आज भारत की शैक्षणिक संस्थाओं को इस कार्य के लिए आगे आना होगा, और समर्पित भाव से ऐसी परियोजनाओं में जुटना होगा जिनसे की हम आगे आने वाली पीढ़ी को इस ज्ञान का बोध करा सकें। भारतीय ज्ञान परंपराएं मनुष्य की आंतरिक शांति और मन की भावनाओं को नियंत्रण में रख सकती हैं। आज हमारे सामने कई समस्याएं हैं जिनका समाधान करने के लिए, भारत की शिक्षा व्यवस्था को सुद्रण बनाना होगा। इस हेतु सनातन ज्ञान एवं वर्तमान ज्ञान को एकीकृत करना अति आवश्यक है। भारतीय ज्ञान परंपरा को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थियों को ज्ञान प्रदान किया जाना चाहिए । राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में दिए गए निर्देशों एवं कार्यों को पूरा करने के लिए यह आवश्यक है कि हम पहले इन निर्देशों को एक खोजपूर्ण तरीके से ग्रहण करें। तत्पश्चात निर्माण, शिक्षणअभिकल्प एवं अधिगम संबंधी उपकरण आदि पर ध्यान केंद्रित करें। केवल सत्यपूर्ण एवं वैज्ञानिकता के आधार पर ही हम भारतीय ज्ञान परंपरा एवं सनातन ज्ञान को सुचारू रूप से आगे बढ़ा सकते हैं। तभी आगामी पीढ़ी इस भारतीय गौरव को आगे अनुभव कर सकेगी। इस शिक्षा नीति के द्वारा हम भारत को विश्व गरु बनाने का स्वप्न पूर्ण कर सकते हैं।

संदर्भ सूची : -

1. प्रो. गीता सिंह (2022) भारतीय ज्ञान परंपरा की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मंप्रासंगिकता, Aarhant multi disciplinary International Education Research journal
2. NEP (2020) national education policy New DELHI MHRD
3. पत्रिका मीडिया नवचिंतन जनवरी- मार्च 2018

वैश्विक संस्कृतिपर भारतीयज्ञान परंपरा का प्रभाव

प्रो. रामदयाल मकवाना
'अर्थशास्त्र विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय
श्योपुर (म. प्र.)

राजाराम मुवेल
अर्थशास्त्र विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय
श्योपुर (म. प्र.)

शोध सारांश : -

किसी भी देश की ज्ञान प्रणाली का मूल घटक उसका स्वदेशी ज्ञान होता है। यह शोध पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा एवं स्वदेशी ज्ञान की वैश्विक परिदृश्य में प्रासंगिकता एवं महत्व को परिभाषित करके एक सिंहावलोकन प्रस्तुत करता है, जो किसी संस्कृति या समाज के लिए अद्वितीय है और स्थानीय स्तर केनिर्णय के लिए आधार बनाता है। भारतीयज्ञान परंपरा का विश्व की अन्य संस्कति से गहरा संबंध रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक संस्कृति पर गहरा और व्यापक प्रभाव है। यह प्रभाव प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक देखने को मिलता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में दर्शन, विज्ञान, गणित, योग, आयुर्वेद, और कला जैसे विविध क्षेत्रों में अद्वितीय योगदान किया है। भारतीय दर्शन, विशेषकर वेदांत, बौद्ध और जैन विचारधाराओं ने विश्व भर में आध्यात्मिकता और दर्शन को समृद्ध किया है। महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद, और महर्षि महेश योगी जैसे भारतीय विचारकों ने वैश्विक स्तर पर अहिंसा, शांति, और मानवता के विचारों को फैलाया।

भारतीय योग और ध्यान की परंपरा ने विश्वभर मे स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आत्म-विकास के साधन के रूप में व्यापक मान्यता प्राप्त की है। आज, योग दिवस को विश्व स्तर पर मनाया जाता है, जो भारतीय योग परंपरा के वैश्विक स्वीकार्यता का प्रमाण है। भारतीय विद्वानों ने गणित, खगोल विज्ञान, और चिकित्सा विज्ञान में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शून्य की खोज, दशमलव प्रणाली, और आयुर्वेद जैसी प्राचीन विधाओं ने वैश्विक विज्ञान को समृद्ध किया है। भारतीय ज्ञान परंपरा ने न केवल भारत में बल्कि पूरे विश्व में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों में अमूल्य योगदान दिया है। यहपरंपरा आजभीजीवित है और लगातार वैश्विक संस्कृति को प्रभावित कर रही है,

जिससे एक अधिक समृद्ध, स्वस्थ और शांतिपूर्ण विश्व की दिशा में योगदान हो रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व कई दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है, और इसका प्रभाव भारतीय समाज, संस्कृति और वैश्विक ज्ञान परंपरा पर भी स्पष्ट रूप से नजर आता है। यहाँ कुछ प्रमुख बिंदु हैं जो इसके महत्व को दर्शाते हैं।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत : -

भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन समय से विकसित होती आ रही है और इस मे वेद, उपनिषद, पुराण, और महाकाव्यों जैसे ग्रंथशामिल हैं। इन ग्रंथों में जीवन, धर्म, और ज्ञान के गहरे पहलुओं पर चर्चा की गई है, जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के मूलभूत तत्व हैं। फिलॉसॉफी और ध्यानः भारतीय ज्ञान परंपरा में अद्वैतवेदांत, और अन्य दार्शनिक प्रणाली शामिल हैं जो जीवन के उद्देश्यों, योग, आत्मा की पहचान और मानसिक शांति पर जोर देती हैं। ये प्रणालियाँ न केवल व्यक्तिगत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, बल्कि आधुनिक मनोविज्ञान और तनाव प्रबंधन में भी योगदान दे रही हैं।

वैज्ञानिक और गणितीय योगदान : -

भारत ने गणित, खगोलशास्त्र, और आयुर्वेद में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शून्य का आविष्कार, त्रिकोणमिति के सिद्धांत, और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियाँ इन योगदानों के प्रमुख उदाहरण हैं। ये न केवल भारतीय समाज के लिए, बल्कि वैश्विक वैज्ञानिक समुदाय के लिए भी महत्वपूर्ण हैं।

सामाजिक और नैतिकमूल्य : -

भारतीय ज्ञान परंपरा ने जीवन के नैतिक और सामाजिक पहलुओं को समझाने में मदद की है। अहिंसा, सत्य, और धर्म के सिद्धांत भारतीय समाज के नैतिक ढांचे को प्रभावित करते हैं और सामुदायिक जीवन मे सामंजस्य बनाए रखने में सहायक होते हैं।

आध्यात्मिक उन्नति : -

परमात्मा और ब्रह्मा के अवधारणाओं को समझने में मदद करती है। यह व्यक्तिगत आध्यात्मिक उन्नति और आत्मा की शांति के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है।

वैश्विक स्तर पर भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रभाव : -

भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक स्तर पर गहरा और व्यापक प्रभाव पडा है, जो प्राचीनकाल से लेकर आजतक विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है। यह प्रभाव न केवल सांस्कृतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में है, बल्कि विज्ञान, चिकित्सा, कला, और साहित्य मे भी परिलक्षित होता है। योग और ध्यान की भारतीय परंपरा ने पूरे विश्व में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण साधन के रूप र्म पहचान बनाई है। योग और ध्यान के अभ्यास ने पश्चिमी देशों में भी बहुत लोकप्रियता हासिल की है,

जिससे योग दिवस का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाना इसका एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। भारतीय वेदांत और बौद्ध धर्म के विचारों ने पश्चिमी दर्शन और मनोविज्ञान को गहराई से प्रभावित किया है। बौद्ध धर्म का फैलाव विशेष रूप से एशिया के कई देशों में हुआ और इसका प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। पश्चिमी देशों में भी ध्यान और शांति के विचारों का प्रचार-प्रसार हुआहै।

भारतीय गणितज्ञों ने शून्य और दशमलव प्रणाली की खोज की, जिसने आधुनिक गणित और विज्ञान की नींव रखी। इस प्रणाली के बिना वर्तमान गणित और कंप्यूटर विज्ञान की कल्पना करना कठिन है। महाभारत, रामायण, और भगवदीता जैसे भारतीय महाकाव्यों ने न केवल भारतीय उपमहाद्वीप बल्कि विश्व के अन्य भागों में भी साहित्य और नैतिक शिक्षा पर गहरा प्रभाव डाला है। स्वामी विवेकानंद ने पश्चिमी देशों में भारतीय आध्यात्मिकता और वेदांत के विचारों को फैलाया, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा को वैश्विक स्तर पर मान्यता मिली। महात्मा गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह के सिद्धांतों ने भी विश्व के कई स्वतंत्रता आंदोलनों को प्रेरित किया। जैसे गुरु व्यक्तियों ने ट्रांसेंडेंट लमेडिटेशन और आर्टऑ फ़लिविंग जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से विश्वभर में भारतीय ज्ञान परंपरा के आध्यात्मिक और मानसिक स्वास्थ्य के लाभों को फैलाया है।

वैश्वीकरण और भारतीयशिक्षा-वैश्वीकरण : -

भारतीय शिक्षा-वैश्वीकरण (Globalization) और भारतीय शिक्षा प्रणाली के बीच एक जटिल और परस्पर प्रभावी संबंध है। वैश्वीकण ने भारतीय शिक्षा को कई तरीकों से प्रभावित किया है, और इसके साथ ही, भारतीय शिक्षा प्रणाली ने वैश्वीकृत दुनिया में अपनी भूमिका को समझने और उसमें समायोजित होने की कोशिश की है। वैश्वीकरण (Globalization) और भारतीय शिक्षा प्रणाली के बीच एक जटिल और परस्पर प्रभावी संबंध है। वैश्वीकरण ने भारतीय शिक्षा को कई तरीकों से प्रभावित किया है, और इसके साथ ही, भारतीय शिक्षा प्रणाली ने वैश्वीकृत दुनिया में अपनी भूमिका को समझने और उसमें समायोजित होने की कोशिश की है। वैश्वीकरण (Globalization) और भारतीय शिक्षा प्रणाली के बीच एक जटिल और परस्पर प्रभावी संबंध है। वैश्वीकरण ने भारतीय शिक्षा को कई तरीकों से प्रभावित किया है, और इसके साथ ही, भारतीय शिक्षा प्रणाली ने वैश्वीकृत दुनिया में अपनी भूमिका को समझने और उसमें समायोजित होने की कोशिश की है।

भारतीय समाज पर असर : -

भारतीय समाज पर वैश्वीकरण (Globalization) के असर को समझना कई दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण है। वैश्वीकरण ने भारतीय समाज के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित किया है, और इस का प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह से देखा जा सकता है। वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था कोअंतरराष्ट्रीय बाजारों से जोड़ दिया है, जिससे विदेशी निवेश और व्यापार में वृद्धि हुई है। इससे नौकरी के अवसर बढे हैं और कई क्षेत्रों में आर्थिक विकास हुआ है। हालांकि वैश्वीकरण ने समृद्धि बढाई है, लेकिन यह आर्थिक असमानता को भी बढ़ावा दे सकता है। अमीर और गरीब के बीच की खाई गहरी हो गई है, और ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी क्षेत्रों के बीच विकास की असमानता बढी है।

विश्वपटल पर भारतीय संस्कृति : -

विश्वपटल पर भारतीय संस्कृति का प्रभाव और पहचान तेजी से बढ़ी है। भारतीय संस्कृति की विविधता, गहराई, और समृद्धि ने वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इसके विभिन्न पहलुओं काप्रभाव न केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान मे देखा जा सकता है, बल्कि यह वैश्विक समाज के कई क्षेत्रों में भी महसूस होता है। भारत की प्रमुख धर्मो मे हिंदू, बौद्धधर्म, जैनधर्म, और सिखधर्म शामिल हैं। इन धर्मों के विचार और प्रथाएँ वैश्विक स्तर पर फैली हैं। योग, ध्यान, और वेदांत जैसे दर्शन ने पश्चिमी दुनिया में भी व्यापक मान्यता प्राप्त की है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और भारतीय ज्ञान परम्परा : -

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 औरभारतीय ज्ञान परंपरा के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध स्थापित होता है। NEP 2020, भारतीय शिक्षा प्रणाली में व्यापक सुधारों का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जो भारतीय ज्ञान परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर को समेटने और उसे आधुनिक शिक्षा में शामिल करने का प्रयास करता है। भारतीय ज्ञान परंपराका आपस में गहरा संबंध है। यह नीति भारतीय ज्ञान परंपरा की समृद्ध धरोहर को पुनः स्थापित करने और आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसके समावेश पर विशेष जोर देती है।

भारतीय ज्ञान, विज्ञान, कला, और संस्कृति को समकालीन शिक्षा के साथ जोड़ने के लिए यह नीति एक महत्वपूर्ण कदम है।NEP 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परंपरा की मान्यता और समावेश को बढ़ावा देने पर जोर दिया है। इसका उद्देश्य भारतीय शैक्षिक परंपराओं, जैसे वेद, उपनिषद, योग, और आयुर्वेद को शैक्षिक पाठ्यक्रम में शामिल करना है। यह भारतीय सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टिकोणों को संरक्षित करने और उन्हें युवा पीढ़ी के साथ साझा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय विद्वानों ने गणित, खगोल विज्ञान, और चिकित्सा विज्ञान में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शून्य की खोज, दशमलव प्रणाली, और आयुर्वेद जैसी प्राचीन विधाओं ने वैश्विक विज्ञान को समृद्ध किया है। भारतीय कला, संगीत, नृत्य और साहित्य ने वैश्विक कला संस्कृति में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय शास्त्रीय संगीत, नृत्य और लोककला विश्वभर में अपने अनूठे स्वरूप और सौंदर्य के लिए सराही जाती है।

निष्कर्ष : -

भारतीय ज्ञान परंपरा में विश्व के सभी देशो के साथ समायोजित होकर एक प्रेरणादायी केरूप में कार्य किया है, परिवर्तन प्रकृति का नियम है लेकिन, हमें यह सुनिश्चित करना होगा की हमारे देश को पतन की और न ले जाएँ, हमारे परिवर्तन का मतलब सकारात्मक होना चाहिए होना अच्छाई से

अच्छाई की और ले जाएँ जिससे हमारी भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की जा सके, अगर ह्मारीसंस्कृति ही नहीं रही तो हम स्वयं अपना अस्तित्व खो देंगे संस्कृति के बिना समाज में विसंगतियां फेलने लगेगी। भारतीय संस्कृति एक महँ जीवनधारा है जो प्राचीन काल से सतत प्रवाहित है इस तरह से भारतीय संस्कृति स्थिर एवं अद्वितीय है जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी वर्तमान पीढ़ी पर है उसकी उदारता और साम्यवादी गुणों अन्य संस्कृति को समहित्न तो किया है किन्तु अपने अस्तित्व के मूल को सुरक्षित रखा है सर्वगीनता, विशालता की दृष्टी से अन्य संस्कृतियों की अपेक्षा भारतीय संस्कृति अग्रणी स्थान रखती है।

सन्दर्भ : -

1. Pastriya Siksha (nd). भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति. https://rashtriyashi ksha comi nd an knowedge trad ti on and national - education pd l cy/
2. विकिपीडिया. (nd). मुख्य पृष्ठ https://hi.wikiped acrg wki
3. Brg (nd). Brg सर्च https://bing commsearch
4. निश्पक्ष दस्तक. (nd). जानिए क्या है भारतीय ज्ञान परपरा. https://rishpakshdastak comaknowwhat-is-ind an knowedge tradti ov
5. IJSR (2023). शोध पत्रः भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. https://wwijsr.net/archive/V1218/R3825134400.pdf
6. Indica (2023). भारतीय ज्ञान परंपराओं का विश्व में योगदान पर शोधपत्रों के लिए आमत्रण. https://ind cain/call-for -papers-contribution-of-indan knowedge trad ti ons to the verld
7. IJCR (2023). भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व और उसकी प्रासंगिकता. https://ijart.org/papers/IJCR 2310324.pof

Confluence of Physical Laws and Commerce in Ancient India: Lessons from Knowledge Systems

Dr. Lokendra Singh Jat
Department of Commerce,
PMCOE Govt. P.G. College
Sheopur, Madhya Pradesh

Mr. Vikash Jat
Department of Physics,
Govt. Adarsh Girls College,
Sheopur, Madhya Pradesh

Abstract :

This review explores the deep connection between physics and commerce in ancient India, where the two disciplines intersected to foster economic prosperity and scientific advancement. Drawing on ancient Indian knowledge systems such as the Vedas, Upanishads, and other classical texts, this paper examines the underlying physical laws that govemed trade and economic activities in ancient Indian society. Additionally, it delves into how technology, measurement systems, and ethical considerations informed sustainable commerce practices. The goal is to extract lessons that are relevant for modem interdisciplinary thought, emphasizing how ancient Indian wisdom can guide contemporary economics and scientific endeavours.

Introduction to Ancient Indian Knowledge :

Systems:Ancient Indian knowledge systems were inherently holistic, seamlessly blending science, philosophy, and practical economic considerations. In Indian civilization, knowledge was classified broadly into two categories: ParāVidvā (knowledge of the transcendental) and Aparā Vidvā (knowledge of the material world), both of which were essential to the prosperity of the individual and the state.

The Vedas and Upanishads, composed between 1500 BCE and 500 BCE, are filled with references to natural phenomena, the nature of reality, and early economic practices. From a physics perspective, ancient Indian scholars investigated the properties of time, space, and matter, laying the foundation for a rudimentary understanding of the physical world. These insights were applied to various domains, including commerce, where scientific principles informed trade, industry, and economics.

Vedic Perspectives on Physics and Natural Phenomena :

The Vedas are rich in observations of natural phenomena that reflect an early understanding of physics. The Rigveda, for example, makes reference to the principles of motion, energy, and force. It describes the cyclical movement of celestial bodies, which would later become crucial in understanding astronomy and its applications in trade.

Key scholars such as Varāhamihira and Aryabhata expanded upon these ideas, exploring the motion of planets, the concept of gravity (called Gurutvaakarshan), and the behaviour of light. These fundamental concepts laid the groundwork for understanding natural phenomena that impacted commerce, particularly in navigation and transportation, where an understanding of motion and force was essential for maritime trade and land-based logistics.

Commerce in Ancient India:

Economic Systems and Trade Practices: Ancient Indian commerce flourished due to a well-organized system of trade and economic regulation. The Arthashastra, attributed to Chanakya (circa 300 BCE), is a comprehensive treatise on statecraft, economics, and commerce, providing insights into taxation, trade regulations, and market dynamics. The guild system (Shreni) played a central role, with merchant guilds organizing production, trade, and distribution across regions.

Trade routes such as the Silk Road and Maritime Spice Routes connected India to Europe, Central Asia, and Southeast Asia. These routes were not only commercial corridors but also avenues for the exchange of scientific and philosophical ideas. The integration of science and commerce was evident in the meticulous planning of trade logistics. market operations, and taxation, ensuring that both economic and natural laws were respected.

Scientific Basis of Trade and Commerce:

One of the most significant contributions of ancient Indian knowledge to commerce was the development of precise systems of measurement. These systems were grounded in physical principles and were essential for trade. Weights and measures such as the Mana (volume), Nivartana (length), and Shatamana (weight) were standardized across regions to facilitate trade. The use of mathematics was particularly advanced in calculating volumes, areas, and distances, which were critical in agrarian economics and commerce. Astronomical measurements were employed to determine optimal trading seasons, as trade fairs and market exchanges were often linked to lunar and solar cycles.

Applications of Physical Laws in Commercial Practices:

Ancient Indian merchants and artisans had a deep understanding of physical laws, which they applied in various aspects of commerce. Mechanics played a key role in designing transportation systems, particularly in the construction of carts, boats, and other vehicles. The principles of gravity, motion, and friction were well understood, even if not formally codified in the manner of modem physics. Shipbuilding in ancient India was an advanced industry, with detailed knowledge of buoyancy and hydrodynamics. The large ships that sailed from India to the Roman Empire and Southeast Asia were built using techniques that ensured stability and speed, showcasing an empirical understanding of physical principles.

Technological Innovations in Ancient Indian Commerce:

Ancient Indian commerce was also marked by technological innovations driven by physics. For instance, water management technologies such as step wells and imigation systems facilitated agriculture, which was the backbone of the economy. The understanding of fluid dynamics enabled efficient water distribution, enhancing agricultural yields and, by extension, trade. Metallurgy was another field where physics and commerce converged. India was a pioneer in the production of high- quality steel (e.g., Wootz steel), which was in demand globally. The physical properties of metals were carefully studied and applied to create superior tools, weapons, and trade goods, demonstrating the link between material science and commerce.

The Influence of Astronomy and Calendar Systems on Trade:

Astronomy was vital for determining the timing of trade activities. Ancient Indian astronomers such as Aryabhata developed sophisticated calendar systems based on the movement of celestial bodies, which traders used to plan voyages and market exchanges. The lunar and solar cycles dictated agricultural cycles, harvest times, and the timing of trade fairs. The use of nakshatras (lunar mansions) in navigation allowed traders to undertake long-distance maritime trade. These precise astronomical calculations enabled merchants to travel safely and efficiently, reducing the risks associated with sea trade.

Sustainability in Ancient Indian Commerce:

Lessons from Physics: Ancient Indian commerce emphasized sustainability, often adhering to natural principles to ensure the long- term viability of trade and resource use. Agriculture was managed in ways that preserved soil fertility, using crop rotation and natural fertilizers. Understanding the laws of energy and matter in nature guided the sustainable use of resources, ensuring that commerce did not lead to environmental degradation. The ethical dimension of sustainability was also integral to ancient Indian commerce, as reflected in the principle of Dharma, which advocated for responsible use of resources and faimess in trade.

Lessons for Modern Science and Commerce:

Bridging Ancient and Contemporary Thought: The interdisciplinary approach of ancient Indian knowledge systems offers valuable lessons for modem science and commerce. The ancient emphasis on sustainability, precision in measurement, and ethical economic practices are increasingly relevant in today's global economy. The integration of physical laws in trade practices, combined with a deep respect for natural resources, provides a model for balancing economic growth with environmental stewardship. Furthermore, the blending of scientific inquiry with philosophical wisdom in ancient India underscores the importance of holistic thinking in addressing contemporary challenges. By revisiting these ancient systems, modem scholars can develop new frameworks that harmonize scientific advancements with economic sustainability.

Conclusion :

The confluence of physical laws and commerce in ancient India reveals a sophisticated understanding of both science and economics. By applying principles of physics to trade, transportation, and resource management, ancient Indian scholars and merchants fostered a thriving economy that respected both natural laws and ethical values. The lessons from these knowledge systems offer valuable insights for modem interdisciplinary research, promoting a balanced approach to economic growth, technological advancement, and environmental sustainability.

References:

1. Basham, A. L. (2004). The Wonder That Was India. Picador.
2. Chattopadhyaya, D. (1986). History of Science and Technology in Ancient India: The Beginnings. Firma KLM
3. Mukherjee, B. (2001). The Vedic Foundations of Indian Science and Technology. In M. Frits (Ed.). Essays on Indian Science and Technology (pp. 45-68). Oxford University Press.
4. Plofker. K. (2009). Mathematics in India: 500 BCE-1800 CE. Princeton University Press.
5. Sharma, R. S. (1996). Urban Decay in India (c. 300-c. 1000). Munshiram Manoharlal Publishers.
6. Subbarayappa, B. V. (1999). Indian Astronomy: An Historical Perspective. In Astronomy Across Cultures: The History of Non-Westem Astronomy (pp. 339-384). Kluwer Academic Publishers.

भारतीय ज्ञान परंपरा और वनसंपदा

दत्तपालसिंह भँवर

वाणिज्यविभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविद्यालय
श्योपुर (म.प्र.)

शोध सारांश : -

भारतीय ज्ञान परंपरा सदियों से ही काफी विशाल एवं समृद्ध है, इसी ज्ञान परंपरा में वनसंपदा का भी महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय पौराणिक कथाओं में भी वनउत्पादों का विशेष महत्त्व है, ये उत्पाद न केवल आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि सांस्कृतिक और पर्यावरणीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं। वनोत्पादोंका औषधीय महत्व बहुत अधिक है। यहाँ के जंगलों में कई प्रकार के औषधीय पौधे पाए जाते हैं, जो विभिन्न रोगों के उपचार में उपयोगी होते हैं। विदेशों को भी, भारतीय ज्ञानमेंवनोत्पादों के महत्व को जानने की आवश्यकता है। ये उत्पाद वन संसाधनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और स्थानीय समुदायों की आजीविका, स्वास्थ्य, और सांस्कृतिक प्रथाओं में गहराई से जुड़े हुए हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा में वनसंपदा का अध्ययन और उनका संरक्षण बहुत महतवपूर्ण है। विभिन्न शोध और अध्ययन से ज्ञात होता है किकैसे वनसंपदा का सतत उपयोग और प्रबंधन स्थानीय समुदायों की आजीविका और पर्यावरणीय संतुलन को बनाये रखने में उपयोगी सिद्ध होगा।

शब्द कुंजी :

वनसंपदा, वनोत्पाद, भारतीय ज्ञान परंपरा

परिचय : -

इन उत्पादों में गोंद, तेंदूपत्ता, बाँस, लाख, महुआ, शहद, और औषधीय पौधों की जड़ी-बूटियाँ शामिल होती हैं। इनका संग्रह और उपयोग कई ग्रामीणों की आजीविका का प्रमुख स्रोत होता है। वनसंपदा का ऐतिहासिक परिदृश्य बहुत ही समृद्ध और विविधतापूर्ण है। प्राचीन कालमें, वनसंपदा का उपयोग मुख्यतः घरेलू और औषधीय उद्देश्यों के लिए किया जाता था। आयुर्वेदिक चिकित्सा में औषधीय पौधों का विशेष महत्व था।

मध्यकालमें, व्यापार और वाणिज्य के विस्तार के साथ वनसंपदा का महत्व बढ़ा। विशेष रूप से, मसालों और औषधीय पौधों का व्यापार बहुत महत्वपूर्ण था। आधुनिक कालमें, वनसंपदा का उपयोग उद्योगों में कच्चे माल के रूप में होने लगा। बांस और रेजिन जैसे उत्पादों का उपयोग कागज, फर्नीचर, और अन्य उद्योगों में होने लगा। वनसंपदा का आर्थिक और सामाजिक महत्व भी बढ़ा है, विशेषकर ग्रामीण समुदायों के लिए, जो इन उत्पादों पर निर्भर रहते हैं।

वनसंपदा का महत्व : -

भारतीय ज्ञान परंपरा में वनसंपदा का प्राचीन काल से ही महत्त्व रहा है, क्योंकि मानव अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति इन्ही वनसंपदाओं से करता आया है।

आर्थिक योगदान : -

वन संपदा प्राचीन काल से ही ग्रामीण समुदायों की आय का बहुत बड़ा स्त्रोत रहा है, ये उत्पादन केवल स्थानीय बाजारों में बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में भी बेचे जाते हैं,
जिससे आर्थिक समृद्धिको बढ़ावा मिलता है। उदाहरण के लिए, तेंदू पत्ता बीड़ी उद्योग का मुख्य कच्चा माल है, जिससे हजारों लोगों को रोजगार मिलता है।

आजीविका का स्रेत : -

वनसंपदा प्राचीन काल से ही ग्रामीणों की आय का का महत्वपूर्ण स्त्रोत रहा है। ग्रामीण जनसँख्या का बहुत बड़ा हिस्सा इन्ही वनों एवं वनोत्पाद पर निर्भर है। उनकी आय में वनोत्पाद का बहुत बड़ा योगदान होता है। ग्रामीण समुदायों के लिए वनसंपदा एक महत्वपूर्ण आजीविका का स्रोत है, जिससे उनकी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।

सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व : -

भारतीय समाज में वनसंपदा का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों जैसे आयुर्वेद और लोक चिकित्सा में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ग्रामीण समुदायों के पास वनसंपदा के संग्रहण और उपयोग के पारंपरिक ज्ञान और विधियाँ होती हैं, जो पीढ़ियों से चली आ रही हैं। यह पारंपरिक ज्ञान न केवल वनों के संरक्षण में सहायक होता है बल्कि सतत विकास को भी प्रोत्साहित करता है।

पर्यावरणीय और पारिस्थितिक महत्व : -

वनसंपदा का सतत संग्रहण और उपयोग वनों के संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र के संतुलन के लिए महत्वपूर्ण है। यह वनस्पतियों और जीवों के आवासों को बनाए रखने में सहायक होता है, साथ ही पारिस्थितिकी तंत्र की विविधता को भी सुरक्षित रखता है।

वनसंपदा की प्रासंगिकता : -

वनसंपदा की प्रासंगिकता अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण से जीवन के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक प्रभाव डालती है। यहाँ वनसंपदा की कुछ प्रमुख प्रासंगिकताएँ दी गई हैं:

पर्यावरणीय प्रासंगिकता : -

- जलवायु संतुलन: वन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करके वायुमंडलीय संतुलन बनाए रखने में मदद करते हैं। यह ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने में सहायक होते हैं।
- जल संरक्षण: वनों से जल प्रवाह और भूमिगत जल स्तर को नियंत्रित किया जाता है। वन क्षेत्रों में पानी का प्राकृतिक रूप से संग्रहण होता है, जो वर्षा जल संचयन और जलधारा को बनाए रखने में सहायक होता है।
- मिट्टी संरक्षण: वनस्पति जड़ें मिट्टी को बांधने का कार्य करती हैं, जिससे मिट्टी का कटाव रोका जा सकता है। इससे भूमि की उर्वरता बनी रहती है।

जैव विविधता संरक्षण : -

वनों में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे, जंतु और अन्य जीव होते हैं, जो पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हैं। वन जैव विविधता का संरक्षण करके पारिस्थिति की तंत्र को बनाए रखने में मदद करते हैं।

आर्थिक प्रासंगिकता : -

- लकड़ी और अन्य उत्पाद: वन लकड़ी, औषधीय पौधे, रबर, बांस, और फाइबर जैसी कई सामग्री का स्रोत होते हैं, जो विभिन्न उद्योगों के लिए आवश्यक हैं।
- आजीविका का साधन:-कई आदिवासी और ग्रामीण समुदाय अपनी आजीविका के लिए वनसंपदा पर निर्भर होते हैं। उन्हें वनों से खाद्य पदार्थ, ईंधन, और अन्य उत्पाद मिलते हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक प्रासंगिकता : -

वनों का धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व भी होता है। भारतीय संस्कृति में वनों को पवित्र माना जाता है और उनका संरक्षण उनकी धार्मिक मान्यताओं से जुड़ा होता है। भारतीय संस्कृति में कई वृक्षों को पुजा एवं व्रत भी रखा जाता है तथा वन कई जनजातियों और समुदायों की जीवनशैली और परंपराओं का अभिन्न अंग हैं।

स्वास्थ्य और औषधीय महत्व : -

कई प्रकार के औषधीय पौधे वन क्षेत्रों से ही प्राप्त होते हैं, जो मानव स्वास्थ्य के लिए आवश्यक औषधियाँ और उपचार प्रदान करते हैं। तथा प्राकृतिक चिकित्सा में इन पौधों का उपयोग सदियों से किया जाता रहा है। वनसंपदा का संरक्षण और इसके महत्व को समझना अत्यावश्यक है, क्योंकि यह न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी आवश्यक संसाधनों को संरक्षित करता है।

कुछ महत्वपूर्ण वनोत्पाद : -

औषधीय पौधे और जड़ी-बूटियाँ (Medicinal Plants and Herbs)

- आंवला: विटामिन सी से भरपूर, इसका उपयोग आयुर्वेदिक औषधियों और खाद्य पदार्थों में होता है।
- गुग्गुल: इसे आयुर्वेदिक दवाओं में विभिन्न बीमारियों के उपचार के लिए उपयोग किया जाता है।
- सर्पगंधा: उच्च रक्तचाप और मानसिक रोगों के उपचार में प्रयुक्त होता है।

रेशे और लुगदी (Fibers and Pulp)

- बॉस: निर्माण कार्यों, हस्तशिल्प, और कागज उद्योग में इस्तेमाल होता है।
- पटसन:बोरियाँ, रस्सियाँ, और अन्य वस्त्र उत्पादों के निर्माण में प्रयोग किया जाता है।

गोंद और रेजिन (Gums and Resins)

- सलई गोंद:औषधीय उपयोग और खाद्य पदार्थों में स्थिरता के लिए उपयोग किया जाता है।
- लाख: इसका उपयोग वार्निश, पॉलिश, और दवा बनाने में होता है।

पत्तियाँ (Leaves)

- तेंदूपत्ता: बीड़ी बनाने के लिए महत्वपूर्ण, जिससे बड़ी संख्या में लोग रोजगार पाते हैं।
- महुआ पत्तियाँ: पशुओं के चारे के रूप में और हस्तशिल्प में उपयोग होती हैं।

फल और बीज (Fruits and Seeds)

- महुआ: इसका उपयोग पारंपरिक पेय और मिठाई बनाने में होता है।
- साल बीज: तेल निकालने के लिए उपयोग किया जाता है, जिसे खाद्य और औषधीय दोनों रूपों में प्रयोग किया जाता है।
- चिरौंजी: मिठाई और अन्य खाद्य पदार्थों में उपयोग किया जाता है।

फूल (Flowers)

- महुआ के फूल:इनका उपयोग शराब बनाने, पारंपरिक मिठाई, और औषधियों में किया जाता है। पलाश के फूल: इनके रंग का उपयोग पारंपरिक रंगों और औषधियों में किया जाता है।

शहद और मोम (Honey and Wax)

- शद्द: यह एक प्राकृतिक स्वीटनर है और औषधीय गुणों के लिए भी जाना जाता है। मधुमक्खी का मोम: कैंडल बनाने, कॉस्मेटिक्स, और दवाओं में उपयोग किया जाता है।

बास

- निमाण और हस्तशिल्प उद्याग में व्यापक उपयाग।
- गैर-लकड़ी उत्पाद: फर्नीचर, हस्तशिल्प, और घरेलू उपयोग की वस्तुएँ बनाने में।

लाख (Lac)

- लाख: एक प्राकृतिक रेजिन, जिसका उपयोग वार्निश, पॉलिश, और सजावटी वस्तुओं में होता है।

अन्य उत्पाद (Other Products)

- चारकोल: ईंधन के रूप में उपयोग होता है।
- दुपराज (कात कराची): उपयोगी जड़ी-बूटी, जिसका औषधीय महत्व है।
- वनसंपदा की ये विभिन्न श्रेणियाँ न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण हैं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इनका सतत उपयोग वनों के संरक्षण और ग्रामीण आजीविका को सुरक्षित करने में सहायक होता है।

निष्कर्ष : -

वन संपदा का ऐतिहासिक विकास यह दर्शाता है कि इन उत्पादों का मानव जीवन में हमेशा से महत्वपूर्ण स्थान रहा है, चाहे वह घरेलू उपयोग हो, औषधीय उपचार हो, या फिर व्यापार और उद्योग में योगदान हो।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक, वनसंपदा ने न केवल स्थानीय समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा किया है बल्कि यह वैश्विक व्यापार और उद्योग का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना है। आज भी, वनसंपदाग्रामीण समुदायों के लिए एक महत्वपूर्ण आर्थिक संसाधन बना हुआ है, जो न केवल उनकी आजीविका में सहायक है बल्कि पर्यावरणीय संतुलन और वन संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रकार, वनसंपदाका महत्व समय के साथ-साथ और भी बढ़ता गया है, और इसका सतत उपयोग वनों के संरक्षण और स्थानीय समुदायों की आर्थिक समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सन्दर्भ सूचि : -

1. चोपड़ा, एम.सी. (1995). भारतीय वनोत्पाद और उनका उपयोग वन्यजीव अध्ययन पत्रिका.
2. शर्मा, पी.आर. (2001). भारतीय समाज में वनसंपदा की प्रासंगिकता वन्य प्रबंधन अध्ययन केंद्र.
3. सिंह, जे.के. (2010). भारतीय पुराणों में वनों का महत्व भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन.
4. तिवारी, आर.के. (2018). वन और भारतीय अर्थव्यवस्था: एक समीक्षात्मक अध्ययनद्र. भारतीय पर्यावरण विज्ञान पत्रिका.
5. मिश्रा, एस.पी. (2021). स्थायी विकास और वनसंपदा का भविष्यद्र. ग्रामीण विकास और वन संसाधन पत्रिका.

Vedic View of the Earth, A Geological Vision into The Vedas

Dr. Shyam Lal Bamniya
Department of Geology,
Govt. Adarsh Girls College,
Sheopur (Madhya Pradesh)

Abstract :

This study investigates into the Vedic view of the Earth, exploring the geological and cosmological concepts presented in ancient Indian texts. By analyzing the Vedas and related scriptures, we uncover a unique perspective on the Earth's structure, composition, and processes. The Vedic worldview describes a flat Earth supported by four elephants and a tortoise, surrounded by oceans and mountains. We examine the symbolic and metaphorical significance of these descriptions, revealing a nuanced understanding of geological phenomena, such as earthquakes, volcanic activity, and the water cycle. Moreover, we identify correlations between Vedic concepts and modem geological principles, including plate tectonics and the Earth's axial rotation. This interdisciplinary research sheds light on the ancient Indian understanding of the Earth, representing a sophisticated and multifaceted cosmology that harmonizes spiritual and scientific insights.

Keywords :

Vedic view of the Earth, ancient Indian cosmology, geological concepts, symbolic interpretation.

Introduction :

Every Civilization in the world and most religions have their own literatures of the creation of the universe, which created, from where we came, and what we should do. Unfortunately, these are often short and universal versions that lack information. Thus, they are often given the same regard as myths. However, there are descriptions that give more elaborate explanations of how the cosmic creation fully manifested, which are found in the ancient Vedas and Vedic Literatures, some of the oldest Veda's writings on the planet. These descriptions provide details and answers that other versions leave out. Furthermore, these Vedic descriptions often agree, and sometimes disagree, with the modern scientific theories of creation, and offer some factors that science has yet to consider. (Puranavedas,2024)

The most fundamental aspect of the Vedic Earth Science (Geology), Rig Veda, represents the etemal, self-referral dynamics of consciousness knowing itself. When ancient Vedic Earth Science declares that the first vibration of that cosmic energy, the first explosion (Maha Visphotam) the modem Big Bang theory.

Acharya Kapil gifted the world with the Sankhya School of Thought. His pioneering work through light on the nature and principles of the ultimate Soul (Purusha), Primal Matter (Prakruti) and creation. On his assertion that Prakruti, with the inspiration of Purusha, is the mother of cosmic creation and all energies, he contributed a new chapter in the science of cosmology. Because of his extrasensory observations and revelations on the secrets of creation, he is recognized and saluted as the Father of Cosmology.

Mandala (circle) is a spiritual and ritual symbol in Indian religions, representing the universe. The basic form of most mandalas is a square with four gates containing a circle with a centre point. Each gate is in the general shape of a T. Mandalas often exhibits radial balance. The term appears in the Rigveda as the name of the sections of the work, but is also used in other religions and philosophies, particularly Buddhism. In various spiritual traditions, mandalas may be employed for focusing attention of practitioners and adepts, as a spiritual guidance tool, for establishing a sacred space, and as an aid to meditation and trance induction. (Puranavedas, 2024)

Sindhu-Saraswati civilization and Vedic Age :

However, as the latest research on the presence of the Saraswati River shows, the nomenclature "Indus Valley or Sindhu Saraswati Civilization is backed by serious evidence, further bolstered by the latest

research on the existence of a mighty river Saraswati as described in the Rig Veda. Recent research published their findings after studying changes in sediment provenance over time along a 300 km stretch of the Ghaggar river basin. The researchers conclude that 80,000 to 20,000 years ago and 9,000 to 4,500 years ago (9-4.5 ka) the river was perennial and was receiving sediments from the Higher and Lesser Himalayas. By a matter of sheer luck, the first site of the civilization was discovered in Harappa in the present-day Pakistan, and led to the initial digs being focused on the Indus Valley. However, as the exploration increased, it became clear a significant number of the sites were present in the Saraswati valley and to its east.

The Rigveda about the Universe :

"Then was not non-existent nor existent: there was no realm of air, no sky beyond it". What covered in and where and what gave shelter? Was water there, unfathomed depth of water Death was not then, nor was there ought immortal: no sign was there, the days and night's divider. That one thing breathless breathed by its own nature; apart from it was nothing whatsoever. Darkness was there; at first concealed in darkness this all was indiscriminate chaos. All that existed then was void and formless; by the great power of warmth was bom that unit" (Puranavedas, 2024).

The whole Universe was at Concentrated at one Point or "dot" (Bindu). It is the primordial seed of creation. After a period of germination it undergoes an "Explosion" (Sphota) resulting in the Sound (Nada) of Creation.

Modem Big Bang Theory postulates that 12 to 14 billion years ago, the portion of universe we can see today was only a few millimeters across. It has since expanded from this hot dense state into the vast and much cooler cosmos we currently inhabit. Big Bang is Similar to Ancient Vedic Bindu Sphota (Maha Visphotam).

As explained earlier, Vedas are called Shrutis. Since Vedas are infinite sound vibrations, our seers have commanded us only to utter or hear Vedas and not to write them. Seers had given them to us for our wellbeing. Vedic hyms connect human soul with cosmic vibrations. It is for this reason; Indians had given great importance to sound.

Vedic Seers had discovered the Cosmic Laws and Secrets and have transmitted them to us through the Vedas. Infinite are Vedic vibes. "Panavaha Sarva Vedeshu". The essence of Vedas in Pranava (Sound of Creation), Vedic Earth Science Perception about our Solar system is clearly stated in Vedas and other oriental Vedic Literatures. Ancient Vedic knowledge is very lucid in its expression about Sun being the Centre of our Universe (Solar System).

Vedic View of the Earth:

The Vedas, ancient Indian texts dated to 1500 BCE 500 BCE, offer a unique perspective on the Earth and the universe. This paper explores the Vedic view of the Earth, its structure, and its place in the cosmos. The Vedas describe the Earth as a flat disc, surrounded by oceans and mountains. The Earth is said to be supported by four elephants, which stand on the back of a giant tortoise. This cosmology is described in the Rigveda and the Puranas. Buddhism does not have a single, unified view of the Earth, and its opinions on the Vedic view vary across traditions and texts. However, Buddhism shares with the Vedic tradition an emphasis on ecological awareness and the interconnectedness of all living beings.Jainism describes the universe as infinite, with no beginning or end. The Earth is seen as a flat disc, but with a different structure than the Vedic view. According to Jain texts, the Earth is composed of seven concentric continents, separated by oceans. The central continent, Jambudvipa, is where humans reside. Jainism has a unique perspective on the Earth, differing from the Vedic view in terms of cosmology, structure, and emphasis. While sharing some similarities, Jainism offers a distinct approach to understanding the natural world.(Rigveda, 1500 BCE)

Correlating Vedic Earth studies with modem science requires a nuanced approach. considering the differences in paradigms, methodologies, and language.

1. Vedic concept of "Bhu-mandala" (Earth as a disc): Can be correlated with modem understanding of the Earth as an oblate spheroid (slightly flattened at the poles).
2. Vedic description of "Seven Continents": Can be linked to modem plate tectonics and the seven maior continental plates.

3. Vedic concept of "Patala" (underworld): Can be correlated with modem understanding of the Earth's mantle and core.

4. Vedic description of "Mount Meru" (axis mundi): Can be linked to modem understanding of the Earth's axis and rotational dynamics.

5. Vedic concept of "Rta" (universal order): Can be correlated with modern understanding of natural laws and principles goverming the Earth's systems.

6. Vedic description of "Agni" (fire): Can be linked to modem understanding of geological processes, such as plate tectonics and volcanic activity.

7. Vedic concept of "Jala" (water): Can be correlated with modem understanding of the Earth's hydrosphere and water cycles.

8. Vedic description of "Vayu" (air): Can be linked to modem understanding of atmospheric science and wind patterns.

Discussion :

To establish correlations, consider the following steps:

1. Contextualize Vedic texts: Understand the historical, cultural, and philosophical context of Vedic literature.

2. Identify scientific concepts: Extract scientific concepts and descriptions from Vedic texts.

3. Map to modem science: Correlate Vedic concepts with modem scientific understanding, using analogies and metaphors.

4. Interdisciplinary approach: Integrate insights from physics, geology, atmospheric science, and other relevant fields.

5. Critical evaluation: Assess the validity and limitations of correlations, acknowledging potential differences in paradigms and methodologies.

By adopting this approach, we can foster a deeper understanding of the intersections and parallels between Vedic Earth studies and modem science.

Conclusion :

The Vedic view of the Earth offers a unique perspective on the natural world. emphasizing the importance of spatial awareness, ecological balance, and the interconnectedness of all living beings. While this view may differ from modem scientific understanding, it remains an important part of India's cultural heritage.

References :

1.https://www.puranavedas.com/vedic-earth-sciences/

2.Rigveda (1500 BCE)

3.Puranas (500 BCE)

4."The Vedic Cosmos" by B. G. Sidharth (2004)

भारतीय काल में भूविज्ञान और गणित की भूमिकाः शिक्षा और समाज पर प्रभाव

प्रो. अलंकृता साकेत
भूगर्भ शास्त्र विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविधालय
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

डॉ. ललिता सिकरवार
गणित शास्त्र विभाग,
शासकीय आदर्श कन्या महाविधालय
श्योपुर (मध्य प्रदेश)

परिचय : -

प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली विज्ञान, गणित, खगोल विज्ञान और भूविज्ञान में उत्कृष्ट योगदान के लिए प्रसिद्ध रही है। भूविज्ञान और गणित प्राचीन भारतीय समाज के महत्वपूर्ण अंग थे, जो न केवल दैनिक जीवन के संचालन में सहायक थे बल्कि इनका प्रभाव शिक्षा और समाज में गहरा था। आज भी इन प्राचीन ज्ञानों का आधुनिक भारत में उपयोग किया जा रहा है। वर्तमान लेख में हम भूविज्ञान और गणित के प्राचीन योगदान पर चर्चा करेंगे और इनके वर्तमान समय पर प्रभाव को भी वर्णित करेंगे।

प्राचीन भारत में भूविज्ञान की भूमिका : -

प्राचीन भारतीय शास्त्रों में पृथ्वी और उसके संरचनाओं का गहन अध्ययन किया गया था। भूविज्ञान, जिसे आज हम पृथ्वी के अध्ययन के रूप में जानते हैं, का उल्लेख वेदों और पुराणों में मिलता है।

पृथ्वी की संरचना और तत्वों का ज्ञानः ऋग्वेद और अथर्ववेद जैसे ग्रंथों में पृथ्वी की संरचना, उसके परतों और प्राकृतिक संसाधनों का वर्णन मिलता है। इन शास्त्रों में पृथ्वी के विभिन्न तत्वों जैसे जल, अग्नि, वायु, और मिट्टी के गुणों और उनकी संतुलन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

खनिज और धातु विज्ञानः प्राचीन भारतीय समाज में खनिजों और धातुओं के उपयोग का उल्लेख व्यापक रूप से किया गया है। रसशास्त्र और अर्थशास्त्र में खनिज विज्ञान और धातु विज्ञान का अध्ययन किया गया था। मौर्य और गुप्तकाल में खनिज संसाधनों का व्यापक दोहन होता था। सोने, चांदी, तांबा, और लौह जैसे धातुओं का उपयोग न केवल आभूषण बनाने में बल्कि हथियार, औजार और मुद्राएँ बनाने में भी होता था।

भूगर्भीय आपदाओं का ज्ञानः प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भूकंप, बाढ़ और अन्य भूगर्भीय आपदाओं का भी उल्लेख मिलता है। वराहमिहिर की प्रसिद्ध पुस्तक बृहत्संहिता में भूकंप के कारणों और उसके प्रभावों का विवरण दिया गया है। इस प्रकार की आपदाओं के साथ किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, इसका भी उल्लेख मिलता है।

जल विज्ञान और सिंचाई प्रणालीः प्राचीन भारतीयों ने जल के प्रबंधन पर गहन अध्ययन किया था। नदियों और जल स्रोतों के संरक्षण और सिंचाई प्रणाली का एक उत्कृष्ट उदाहरण सिंधु घाटी सभ्यता में देखने को मिलता है। सिंचाई और जल प्रबंधन से कृषि में सुधार लाया गया, जिससे समाज की समृद्धि बढ़ी।

प्राचीन भारतीय गणित की भूमिका : -

गणित प्राचीन भारत में न केवल एक विषय के रूप में बल्कि एक जीवन दर्शन के रूप में भी देखा जाता था। भारतीय गणितज्ञों ने न केवल संख्या सिद्धांत बल्कि ज्यामिति, बीजगणित और त्रिकोणमिति में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

शून्य और दशमलव प्रणालीः भारतीय गणित की सबसे बड़ी देन है शून्य और दशमलव प्रणाली। आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने शून्य के सिद्धांत को स्थापित किया, जो गणित और विज्ञान की नींव बना। दशमलव प्रणाली ने गणना के तरीकों में क्रांतिकारी बदलाव लाया और यह आज भी आधुनिक गणना का आधार है।

बीजगणित और त्रिकोणमितिः प्राचीन भारतीय गणितज्ञों ने बीजगणित और त्रिकोणमिति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भास्कराचार्य ने बीजगणित के कई नियमों का प्रतिपादन किया, जो बाद में पश्चिमी गणितज्ञों द्वारा अपनाए गए। आर्यभट्ट ने त्रिकोणमिति के सिद्धांतों का वर्णन किया, जिसमें sine और cosine जैसे त्रिकोणमितीय फलनों का उपयोग हुआ।

खगोल विज्ञान और गणितः गणित का उपयोग प्राचीन भारत में खगोल विज्ञान में भी व्यापक रूप से किया गया था। आर्यभट्ट ने ग्रहों की स्थिति और उनकी कक्षाओं को गणितीय तरीकों से समझने का प्रयास किया। उन्होंने पृथ्वी के घूमने की गति का भी सटीक अनुमान लगाया था, जो आधुनिक खगोल विज्ञान में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

पाई (π) का सटीक मानः भारतीय गणितज्ञों ने पाई (π) के सटीक मान का भी आकलन किया। आर्यभट्ट और माधव ने के मान का लगभग सटीक निर्धारण किया, जिसका उपयोग आज भी हम करते हैं।

आधुनिक भारत पर प्रभाव : -

आज भी प्राचीन भारतीय भूविज्ञान और गणित का ज्ञान भारतीय शिक्षा और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

शैक्षिक क्षेत्र में योगदानः प्राचीन गणित और भूविज्ञान का ज्ञान आधुनिक पाठ्यक्रम का हिस्सा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में आर्यभट्ट,

भास्कराचार्य, और वराहमिहिर जैसे महान वैज्ञानिकों के योगदानों को पढ़ाया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में भी इन प्राचीन ज्ञानों के अध्ययन को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी में योगदानः आधुनिक भारत में खनिज विज्ञान, जल विज्ञान और खगोल विज्ञान में प्राचीन ज्ञान का प्रभाव देखा जा सकता है। खनिज संसाधनों का प्रबंधन और आधुनिक कृषि सिंचाई प्रणाली में प्राचीन भारतीय जल प्रबंधन तकनीकों का उपयोग होता है।

पर्यावरण संरक्षणः प्राचीन भारतीय भूविज्ञान में प्रकृति के साथ संतुलन का ज्ञान था। यह आज के पर्यावरण संरक्षण आंदोलन में भी देखा जा सकता है, जहाँ जल संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग प्रमुख है।

आधुनिक गणितीय अनुसंधानः प्राचीन भारतीय गणितीय सिद्धांत आज भी अनुसंधान और विकास के क्षेत्र में उपयोगी साबित हो रहे हैं। सुपरकंप्यूटर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और खगोल विज्ञान के क्षेत्र में इनका महत्वपूर्ण उपयोग हो रहा है।

निष्कर्ष :-

प्राचीन भारतीय काल में भूविज्ञान और गणित का न केवल शिक्षा बल्कि समाज और विकास में भी महत्वपूर्ण स्थान था। आज के भारत में भी इनका प्रभाव विज्ञान, प्रौद्योगिकी, और शिक्षा के क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक दृष्टिकोण का ज्ञान आधुनिक समय में हमारी चुनौतियों का सामना करने में सहायक हो सकता है और हमें एक स्थायी और उन्नत समाज की दिशा में आगे बढ़ा सकता है।

सन्दर्भ सूची :-

1. Aryabhata. (499). Arvabhatiya. (K. S. Shukla & K. V. Sarma, Trans.). Indian National Science Academy.
2. Bhattacharyya, R. (2011). History of ancient Indian mathematics: From Vedic period to Ganita -Yuktibhs. Journal of the Indian Society for History of Mathematics, 36(2), 145-170.
3. Bose, D. M., Sen, S. N., & Subbarayappa, B. V. (Eds.). (1971). A concise history of science in India. Indian National Science Academy.
4. Rao, S. R. (1985). Lothal and the Indus civilization. Archaeological Survey of India.
5. Varahamihira. (550). Brhat Samhita. (M. Ramakrishna Bhat, Trans.). Motilal Banarsidass.